भाग रौ आ बलचन्दा

भाग रौ आ बलचन्दा

विभा रानी



श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN : 978-93-80538-01-3

मूल्य: भा. रु.100/-

पहिल संस्करण : 2009

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली-११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स-(०११)२५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed & Typeset at: Ajay Arts, Delhi-110002

Sole Distributor :
AJAY ARTS
4393/4A, Ist Floor, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002.
Telephone: 011-23288341

BHAG RO AND BALCHANDA by Vibha Rani
a Play in Maithili Language

भाग रौ

(संपूर्ण मैथिली नाटक)

लेखिका : विभा रानी

पात्र - परिचय

मंगतू
भिखारी बच्चा 1
भिखारी बच्चा 2
भिखारी बच्चा 3
पुलिस
यात्री 1
यात्री 2
यात्री 3
छात्र 1
छात्र 2
छात्र 3
पत्रकार युवक
पत्रकार युवती
गणपत वक्का
राजू - गणपतक बेटा
गणपतक बेटी
गुंडा 1
गुंडा 2
गुंडा 3
हिज़ड़ा 1
हिज़ड़ा 2
किसुनदेव
रामआसरे
दर्शक 1
दर्शक 2
आदमी
तांबे
स्त्री - मंगतूक माय
पुरुष - मंगतूक पिता

दृश्य : 1

(ट्रेनक दृश्य। (ट्रेन नञि भ' क' ई कोनो हाट- बजार अथवा मेला-ठेला सेहो भ' सकैत अछि।) ट्रेन मे महिला आ पुरूष यात्री। भीख माँग' बला तीन टा बच्चा चढ़ैत अछि। एक के गला मे हारमोनियम, दोसराक हाथ मे पाथरक दू टा खपटा। तेसरक हाथ मे खँजड़ी। तेसर बच्चा उमिर में सभ स' छोट। तीनू क तीनू फाटल, चीकट कपड़ा मे अछि। बच्चा नं. 1 हारमोनियम पर सभ' स' नवीन फिल्मी गीतक धुन बजाक गाबि रहल अछि। दोसर बच्चा खपटा बजा-बजाक' ओकरा संगे गएबाक प्रयास क' रहल अछि। छोटका बच्चा खंजड़ी बजा रहल अछि आ गीतक पंक्ति पकड़बाक प्रयास मे आधा-छिया पंक्ति गबैत अछि। तीनूक स्वर; सुर-ताल में कोनो एकरूपता नञि अछि। सभस' छोटका; बच्चा नं. 3 सभ स' पाई मँगैत अछि। किओ देइत अछि, किओ डपटैत अछि, किओ कोनो दोसर दिस तकैत अछि, किओ आँखि मूनि लेइत अछि।)

(ट्रेन रूकैत अछि। तीनू बच्चा उतरि जाइत अछि। मंचक एकटा कोन्टी मे तीनू ठाढ़ भ' क' दिनु भरका कमाई गिनैत अछि।)

बच्चा 1 : कतेक?

बच्चा 2 : साढ़े एगारह।

बच्चा 1 : बस? भरि दिन ट्रेने-ट्रेने घूमल आ तइयो साढ़े एगारहे? अकरा मे त' अपना सभक लेल चाहो-मूढ़ी नञि। (सभस' छोटका बच्चा स') आँए रौ, खाए लेल भरि थारी आ माँग' मे सभ स' पिछारी! ठीक स' माँगै कियै नै छें रे?

(बच्चा 3 बिटिर-बिटिर तकैत रहैत अछि।) मुंह की निहारि रहल छें? हम कोनो की गोविंदा छी कि रितिक

रोशन। आ तोहों आमिर खान नञि छें। जतेक गरीब छें, तकरो स' बेसी गरीब बनल रह। तखने दू टा पाइ भेटतौ।

बच्चा 3 : (सहमैत) ई पटना छै कि दानापुर?

(दुनू बच्चा ई सुनि हठात ठठा पड़ैत अछि। छोटका फेर बिटिर-बिटिर मुंह तकैत रहैत अछि।)

बच्चा 3 : रौ बूड़ि। ई पटना नञि छै, जकरा ककरो स' नञि पटै छै। दानापुर माने दाना स' पूरम पूरा। हमर आओरक पेट मे त' मरल सनकिरबो नञि अछि। की करबहीं रौ जानि क' की हम कत' छी?

बच्चा 1 : भूख लागलए।

बच्चा 2 : तकरा लेल पटना-दानापुर मे रहब जरूरी छै? भूख त' कखनो आ कतहु लागि जाइ छै। दम धर।

बच्चा 3 : पटना सिटी?

बच्चा 2 : ऊँ हूँ। पटना साहेब। सिटी त' कहिया ने बदलि गेलै।

बच्चा 1 : रौ बता, सिटी स' साहेब भ' गेला स' की भ' गेलै? की बदलि गेलै?

बच्चा 2 : बदलि गेलै ने? जनाना स' मर्दाना भ' गेलै।

बच्चा 1 : माने? (गंभीर भ' क')

बच्चा 2 : माने.. सिटी जनाना आ साहेब मर्दाना (दुनू हँसैत अछि। बच्चा 3 ओहिना बिटिर-बिटिर मुंह तकैत रहैत अछि)

बच्चा 1 : नाम बदल' स' तकदीर सेहो बदलै छै की? सिटी स' साहेब भ' गेलै त' हमरा आओरक भूख-पियासक रंग बदलि गेलै की? अपना आओर के काज भेटलौ? पाइ भेटलौ? तहन कियैक एतेक मगजमारी? पटना कि दानापुर कि साहेब की फारबिस गंज.. हुँह!

बच्चा 3 : (उसांस भरिक') भूख लागल अछि।

बच्चा 1 : रौ सार! जो, कोनो हाथी पकड़ि ला आ घोंटि जो। सार.. भूख लागलए, भूख लागलए.. नकिया देलक ईत'..

बच्चा 2 : आजुक समाचार?

बच्चा 2 : बच्चा बेमार। हजारो नेन्ना मरि गेलै, खाएक अभाव मे..

बच्चा 3 : हमरा खाए ला दे। नञि त' हमहू मरि जाएब।

बच्चा 1 : त' मरि जो। प्रधानमंत्री छें जे मरि जेबें त' देसक काज-धंधा थम्हि जेतै।

बच्चा 3 परधानमंत्री कोनो खायबला चीज होइ छै। केहेन होइ छै? कत' भेटै छै?

बच्चा 2 : (ओकर बात पर धेयान देने बेगर) तों कोना बुझलही? तों त' अखबार नञि पढ़ै छैं।

बच्चा 1 : टेसन मे टीबी छै ने। ओकरा मे देखलियै। बढ़िया स' बूझाब' लेल मँगतुआ त' अछिए।

बच्चा 2 : ओकरा कोना बूझल छै?

बच्चा 1 : ओ पढुआ छै। अखबार पढ़ै छै।

बच्चा 2 : भिखमंगो सभ अखबार पढ़ै छै? बाप रौ!

बच्चा 1 : ओ कीनै नञि छै। प्रेसक बाहर बैसै छै। चौकीदार ओकरा द' दै छै अखबार।

बच्चा 3 : भीख मे अखबार! भीख मे चाह-मूढ़ी.. (बजैत-बजैत थम्हि जाइ छै: दुनू बच्चा ओकरा घूरै छै।)

बच्चा 2 : मंगतू सभटा पढ़ि लेइत छै?

बच्चा 1 : हँ, रौ। पूरा अखबार चाटि जाइत छै। पूरा दुनियाक हाल ओकरा बूझल रहै छै। ओ पढ़ल छै।

बच्चा 3 : पढ़ल की होइ छै? पटना-दानापुर जकाँ कोनो टेसन छै की?

बच्चा 2 : (स्नेह स') तो नञि बुझबे अखन।

बच्चा 1 : पढ़ल बहुत पैघ चीज होइत छै। पढ़ि-लिखि क' लोक बहुत पैध-पैध लोक बनि जाइत अछि। मुदा अपना आओरक तकदीर मे ई नञि अछि।

बच्चा 2 : (भरोस दियबैत) नञि छै त' नञि छै। मंगतुआ छै नें पढ़ल-लिखल। अपने बिरादरीवाला। अपना आओर स' गप्प-सप्प सेहो करै छै। दुनिया जहानक समाचार त' दइते छै।

(अई बेर तेसरका बच्चा कएक बेर हाथ मुंह स' भूख लगबाक संकेत द' चुकल अछि। सभ बेर दुनू बच्चा ओकरा घूरैत अछि। तेसरका सभ बेर डेराक शांत भ' जाइत अछि।)

बच्चा 1 : हे.. देख ओम्हर! अपन गोबिन्दा।

बच्चा 3 : ई कोनो नव भिखमंगा ऐलै की? आब त' आओरो भीख नञि भेटत। .. भूख..

बच्चा 2 : मंगतुआ छै।

बच्चा 3 : ई एतेक पैघ घर ओकर छै? आ तइयो भीख..

बच्चा 1 : धुरि बुडि.बक। ई अखबारक ओफीस छियै। अई ठाँ क सभस' पैध अखबारक ओफीस।

बच्चा 2 : ऐं मारल! वो गुड्डी बकाट्टा। बुझा गेल जे ओकरा पढ़ब-लिखब कोना एलै।

बच्चा 1 : अखबारक बगल में रहला स' किओ पढ़ि जाइ छै। मू.ढ़ीक दुकान लग रहला स' मूढ़ी भेटि जाइत छै?

बच्चा 3 : मूढ़ी.. भूख..

दुनू : चोप!

बच्चा 2 : कोनाक' ऊ पढ़ि गेलै तहन?

बच्चा 3 : हमहू पढ़ब।

बच्चा 1 : रौ, कुकुरक नांगरि। पढ़िक' की बनबही? सोनिया गांधी कि मनमोहन सिंह?

बच्चा 2 : राबड़ी देवी। पढ़क जरूरते नञि।

बच्चा 3 : (खिसिया क') पढ़ नञि देबें, खाए लेल नञि देबें, त' करब की? मूति!

बच्चा 2 : पढ़ाईक गेरंटी नञि । खाएक गेरंटी त' आओरो नञि।

बच्चा 1 : कोना पढ़बही रे? मंगतुआ गप्प दोसर छै। ओकरा लग टेम छै। ओकरा भीखो खूब भेटै छै?

बच्चा 3 : पढ़ले सन्ते ने! हमहू पढ़ि लेब त' हमरो बेसी भीख भेटत।

बच्चा 1 : चल, चल ..

बच्चा 3 : कोम्हर? हमरा भूख लागलए।

बच्चा 2 : मंगतुआ लग चल। ओकरा खेनाइयो-पिनाई बहुत रास भेटै छै?

बच्चा 3 : पढ़िक' भीख मांगला स' खेनाइयो फ्री.. हमरा पढ.ा दे।

बच्चा 1 : (दुनू क हाथ पकड़िक एक दिस ल' जाइत) चल, चल पानि सेहो बरस' बला छै। चल ओम्हर (दुनू रास्ता क्रॉस करबाक अभिनय करैत अछि। तेसरका पाछा रहि जइत अछि। दोसरका ओकरा पार करबाक इशारा करैत अछि। तेसरका डेराइत अछि। दोसरका फेर एम्हर अछि। ओकरा एक धौल लगाबैत अछि। फेर खींचिक' रोड पार करैत अछि। पार क' क' तीनू मंगतू लग पहुंचइत अछि। एक गोट मोटरी, एक गोट कटोरा, किछु पाइ ओकरा लग पड़ल अछि। प्रकाश तीनू बच्चाक संगे-संगे आब मंगतू पर।)

बच्चा 1 : की रौ मंगतुआ। की भ' रहल छौ।

मंगतू : के? ओह! चनरा, गोबरा, झुनमा रौ! आ बइस, केहेन चलि रहल छौ धंधा-पानी?

बच्चा 2 : भीख माँगब धंधा पानी होइ छै? आ सेहो अई अंधड़ पानि में!

बच्चा 1 : हमरा त' फूटलो आँखि नञि सोहाइये ई बरखा- बुन्नी। लोक आओर घर मे, आफिस में बन्न। दुकान दौरी सेहो ठप्प। लोक आओरक धंधा-पानी नञि त' हमरा आओर के भीख के देत?

मंगतू : हमरा त' बड़ड नीक लगैय' ई बरिसात। चारू दिस हरियाली, मोन के बड़ड सोहाओन लगैत अछि।

बच्चा 1 : पेट भरल रहला पर बनरनियो रानी मुखर्जी लागै छै।

बच्चा 2 : अपना घर मे बइसक' चाह पकौड़ी उड़ाब' मे केकरा मजा नञि एतै?

(चाह पकौड़ीक नाम स' बच्चा 3 फेर हाथ स' भूख बतबइत अछि।)

बच्चा 1 : हमरा आओरक कोनो ठेकाने नञि! देखै छियै नें जे जहन पानि बरसै छै, तहन भिजैत माय कोरा मे भीजैत बच्चा के ल' क' बिल्डिंगे-बिल्डिंग, घरे-घर बउआ अबैत छै। मुदा कतहु-कोनो चौकीदार ओकरा अपना बिल्डिंग के नीचा आसरा नञि देई छै।

मंगतू : छै। तइयो पानि बरसै छै त' नीक लागै छै। देह मे जिनगी सुरसुराय लागै छै। पानि छै तैं। जिनगी छै नै रौ..! (स्वर बदलिक') आ, तों सभ भिंगमे कियै। तोरा-आओर के त' घर छौ। हमरा जकाँ नञि छौ ने।

बच्चा 1 : हं, सहीए । तोरा नाहित नञि छियै रौ। रहितियैक त' भरि दिन ई टरेन, ऊ बस, नञि करैत रहितहुँ। लोकक लात-बात नञि सुनतहुँ। ई गर्दनि देख.. चिकरि-चिकरि के बाँस जतेक पैध भूर भ' गेल अछि।

बच्चा 2 : आ जे दू टा पाइ भेटै छै, ओहू में पुलिस, दादा सभक..

(ओ बाजिए रहल अछि कि एकटा पुलिस डंडा घुमबैत ओम्हर अबैत अछि। तीनू के देखिते तीनू पर ताबड़तोप. डंडा बरसाब' लगैत अछि। तीनू एम्हर-ओम्हर बचबाक प्रयास करैत अछि। ओही मे देह छीपि-छीपि के पुलिस से नञि मारबक नेहोरा करैत अछि। मंगतूक सेहो प्रयास। अई क्रम मे एक -दू डंडा ओकरो लागि जाइत अछि।)

पुलिस : सार सभ! फेर एम्हर आबि गेलैं। चढ़बे बस ट्रेन में माँग' लेल भीख, आ करबें पाकिटमारी।

बच्चा 1 : नञि साब! हम सभ त'..

पुलिस : चोप.. भोसड़ी के.. सार, बहिनक इयार! ई डंडा एम्हर स' घुसतौ त' मुंह दने निकलतौ। चल भाग, जो ओई गल्ली मे।

(तीनू पुलिसक बताओल गल्ली मे भागि जाइत अछि। पुलिसबाला विजयी भाव स' बस स्टैंड पर ठाढ़ लोक आओर के देखैत अछि आ फेर मंगतू दिस।)

मौज कर रो बाउ, मौज कर। तोहरे भाग मे मौज लिखल छौ। ऐहेन ने देह बना के आएल छें जे मौजे-मौज छौ।

(कहैत ओ गल्ली दिस बढ़ैत अछि।)

दृश्य : 2

(यात्री सभ आपस मे गप्प करैत अछि)

यात्री 1 : एह! ई पुलिसवाला सभ त'..

यात्री 2 : राज-पाट त' एकरे सभक छै ने। कहबी छै ने जे जकरे लाठी, तकरे महीस।

यात्री 3 : कतेक डंडा बरसौलकै ओहि बच्चा सभ पर। बुझाई छै जे ओकरा अपना धिया-पुता नञि छै। आ अईठांक लोग आओर! तमासे देखैत रहि गेल। बाज' लेल किओ नञि।

यात्री 1 : सभक मुंह मे त' जाभी लागल छलै। अहीं कियैक ने बजलियै?

यात्री 2 : अहाँ बाजतहुं त' हमरो सभक हिम्मति बढ़ितियैक ने।

यात्री 3 : (मंगतू दिस) एकरो पर कम नञि बरसलै। हमरा आओर स' नीक त' इएह छल। एहेन देह- दसा होइतहुँ बचब' लेल त' गेलै।

यात्री 1 : के छै ई?

यात्री 3 : (चिढ़ क') अनिल अंबानी।

यात्री 3 : खासियत छै एकरा मे।

यात्री 1 : से की?

यात्री 3 : पढ़ल लिखल छै। रोज अखबार पढ़ै छै।

यात्री 2 : त' जहन पढ़ल छै त' कोनो काज-धंधा कियै नञि करै छै?

यात्री 3 : एतेक अनटेटर गप्प किओ कएलए! अएँ यौ, ओकर देह नञि देखै छियै? के देतै ओकरा काज? अहीं द' दियऊ ने! ओ त' बड्ड प्रसन्न हएत।

यात्री 2 : से कियैक यौ?

यात्री 3 : कियैक त' भीख माँगब ओकरा बड्ड गर्हित कर्म बुझाइ छै।

यात्री 1 : आब अहूं त'। एहेन अनसोहाँति गप नञि करू।

यात्री 2 : अहाँ करी त' किछु नञि, हम करी त' जुलुम?

यात्री 1 : हम कत' स' ओकरा काम देबै? हम त' अपने सेठ के ओहिठाँ बेगार खटै छी।

यात्री 3 : त' खटू । मालिकक दया दृष्टि पर खेबैत रहू। हे, अहीं की, हम सभ किओ सेठक दया-दृष्टिक भीख जोहैत रहै छी। तमासा मे तमासा ई जे हमर सभक मेहनति पर मालिक सभ मौज करैत अछि। काला पानीक कैदी जकाँ माह भर हमरा आओर खटै छी। माहक आखिर मे भीखे जकाँ दस टा पत्ता हमरा आओर दिस फेंक देल जाइत अछि।

(बस अयबाक ध्वनि। यात्री सभ मे हलचल। 'हमर बस आबि गेल', 'हमरो'। 'हमर एखनि धरि नञि।' 'फेर घर पहुँच' मे लेट भ' जाएत' - यात्री सभक उक्ति आ बस द्वारा प्रस्थान।)

कुकुर जकाँ छी, सेठक पगारक सूखल हड्डी चुसैत हम सभ। (बस अबै छै। ओहो लपकि' क' चढ़ि जाइत अछि।)

(प्रकाश तीनू बच्चा पर।)

बच्चा 1 : रौ, जल्दी स' पचटकिया निकाल आ बाकी सभ एम्हर रख। रकसबा अबिते हैतौक।

बच्चा 3 : ओकरा रकसबा कियैक कहै छहौक।

बच्चा 2 : त' की भगवान कहियै? (बच्चा 3 स) तों एकदम किछु नञि बाजबें। कहि देइ छियौ (बच्चा 3 हं में मूंड़ी डोलबैत अछि। पुलिसक प्रवेश।)

पुलिस : रौ हीरो। की भेलौ रौ? ब्रह्मा, विष्णु, महेश? आ कि सलमान खान, आमिर खान, शाहरूख खान। ओकरो.. ऊ लंगड़ा के सेहो पकड़ि ले त' आओर कोनो नाम द' दही नारद बाबा, कृष्ण जी, बलराम जी.. फिल्मी चाही त' जायद खान। एकदम टटका खान छौ। ऐं! कतेक माल बटोरले रे! लेडीज डिब्बा मे सेहो गेल छले ने! अरे, तोरा जकाँ हम रहितियौक ने, त' हम त' खाली लेडीज में जयतियौ। नञि भेंटतियैक भीख, नञि भेंटौ, मुदा मौगी सभके छुबाक अवसर त' भेटितियैक ने! (ठोर भिजबैत अछि) अच्छा चल, निकाल माल! देरी नञि ।

(बच्चा 1 पाँच टकाक रेजगी निकालि क' देइत अछि। पुलिस वाला गिनैत अछि।)

पुलिस : सार! तोरा सभक संगे इएह सभ झंझट अदि। देबें चार गो छदाम आ गिनेबे एक घंटा जे गनैत-गनैत हाथ मे ऐंठी होब' लागय।

बच्चा 1 : साब! आई कतेक पानि बरसलै अछि। देखियौ ने साब। कतेक घटाटोप बरिसाति छियै। भिन्सरे स' ट्रेने-ट्रेन घूमल, मुदा ई पाँच टका स' जास्ती नञि भेटल। साब, एकरा मे स' किछु हमरो सभक भेटि जाए। भिन्सर स' उपासले छी। ई छोटकाक त' अंतड.ी सुखा गेलैय'। (सलाम ठोकैत अछि।)

(पुलिस निर्लज्ज हंसी हंसैत छै। फेर एक धौल बच्चा 1 के लगबैत अछि।)

पुलिस : दलाल स' दलाली एकरे कहै छै ने। ऐ हीरो, बेसी एक्टिंग नञि। (दर्शक स') देखियौ छौड़ा सभक ढिठाई। देत पांच गो टाका, आ ओहि मे आपसो चाही। माने हफ्ता मे हफ्ता। (गब्बर सिंह स्टाइल मे बाजैत अछि) सोच, सोच। हमरा आओरक सोच। सरकार कहै छै, भीख नञि माँग' लेल। कानूनो बना देलकै। मुदा हमरा आओर के दया आबि जाइत अछि तोरा आओर पर। भीख नञि माँगबे त' खेबे कत स'? रौ, मेहरबानी बूझ, मेहरबानी। आ, आब ई पाँच टका स' किछु नञि होब बला छौ। रेट बढ.ा, रेट। देखै नञि छही, कतेक मँहगाई बढ़ि गेलैये।

(डंडा घुमाबैत चलि जाइत अछि.. तीनू एक दोसरा के देखैत अछि। पुलिस के जाइत देरी कि तीनू पाथरक नीचा दबाक' राखल पाइ दिस लुझैत अछि।)

बच्चा 3 : भूख लागलए हमरा।

बच्चा 1 : (खिसिखा क' एक झांपड़ लगबैत अछि। ले, हमर देह काटि क' खा ले हे, ओम्हर जे पांच टका छै ने, तकरा मे बिसरियो के हाथ नञि लगबिहै। नञि त' ओ हाथे कन्हा स' अलग भ' जेतौ। दादाक हिस्सा छै, दादाक।)

बच्चा 2 : त' आब बचलौ की?

बच्चा 1 : डेढ़ टाका। जकरा मे एक गिलास सतुओ नञि एतौ।

बच्चा 2 : तहन .. भूख त' लागल अछि। हमरो, तोरो। चल न फेर मंगतुए लग। ओकरा ल'ग खेनाइयो-पिनाईक समान सभ खूब रहै छै।

(तीनू ओकरा दिस बढ़ैत अछि । मंगतू किछु बड़बड़ क' रहल अछि।)

बच्चा 1 : की रौ मँगतुआ! की डैलोग मारि रहल छैं। नाना पाटेकर जकाँ।

मंगतू : (चौंकि क') अँए.. किछुओ त' नञि ।

बच्चा 3 : भूख ..

बच्चा 1 : चुप सार, कुकुरक पोंछि।

बच्चा 2 : मारि लें डैलोग। तोरे राजपाट छौ रौ। मौज छौ तोरे। ने कोम्हरो एनाइ ने गेनाई। एम्हरे बइसल-बइसल पाइ बरसै छौ तोरा पर। हमरा आओर के देख। भरि दिन ट्रेने-टेन घूमल, तइयो कतेक भेटल? साढ़े एगारह टाका। पाँच टाका पुलिस के, पाँच टाका दादा के। बचलौ कतेक? डेढ़ टाका? अब अई डेढ़ टाका मे की खाऊ हम आओर, जाहि स' पेट भरए? तोरा त' ई सभ नञि सोचबाक छौ ने। तैं कहलियौ जे बड़ड भगमंता छें।

मंगतू : (तिक्त स्वर म') तोंहों भगमंता बनि सकै छें।

ब. 1+2 : (एके स्वर म') हँ, कोना? बता कने! पाइ लेल किछुओ क' सकै छी हम सभ।

मंगतू : किछुओ क' सकै छे ने! त' आ, तोहों बनि जो हमरे जकाँ लूल्हि, लांगड़ .. फिर तोरो लग बरसतो पानिक बदला मे पाइ .. आ .. आ .. बना दियौ .. आबि जो ..

(खूँखार हाव-भाव स' ओकरा दिस बढ़ैत अछि। दुनू बच्चा चिचियाइत अछि। बच्चा 1 ओकरा मार' लेल हाथ उठबैत अछि। फेर नीचा क' लेइत अछि। बच्चा - 3 बच्चा 2 के हाथ स' भूख लगबाक इशारा क' रहल अछि। बच्चा 1 ओकरा देखि लेइत अछि आ मंगतू पर उठाओल हाथ, जे नीचा आबि रहल छलै, ओकरा बच्चा 3 पर जमा देइत छै।)

(अंधकार । प्रकाश। सोझा स' दु गोट पत्रकार युवक-युवती अबैत अछि। युवती जींस आ बॉडी टाइट टी शर्ट मे अछि। कटल केश,

कंधा पर शांतिपुरी झोरा, गर्दनि मे पेन आ मोबाइल लटकल। युवक सेहो जींस आ खूब ढोल ठक्कल टी शर्ट मे अछि। कन्हा पर पोर्टफोलियो बैग, गर्दनि मे कैमरा, मुंह मे सिगरेट। सिगरेट पिबैत धुआँ छोड़ैत छै। धुआं युवती दिस पहुँचै छै। युवती हाथस' धुआं हटबैत तेज नजरि स' युवक के देखै छै।)

युवक : सॉरी, सॉरी। की करू। सभ ठाँ त' नो स्मोकिंग जोन बना देने छै। दफ्तर, पार्क, होटल, अस्पताल - कतहु नञि पीबि सकै छी।

युवती : त' नञि पियू। पानि नञि छै ने, जे मरि जाएब।

युवक : पानि नञि प्राण अछि। अनका लेल अपन प्राण गमाएब हमरा मंजूर नञि ।

(गप्प करैत-करैत युवतीक दृष्टि मंगतू पर पड़ैत छै। ओ भीख लेल सिक्का निकालैत अछि। युवती रोकि देइत अछि।)

युवती : ऊँहू!

युवक : (मजाकिया स्वर मे) त' ई सिगरेटे द' अबै छियै।

युवती : सभ समय मजाक नञि ।

युवक : तहन?

युवती : ओकरा पर चलू एकटा स्टोरी करै छी।

युवक : फेदा।

युवती : ओ पढ़ल-लिखल छै। शारीरिक रूप स' नचार । पढ़ल छै, तैं भ' सकैछ जे भीख माँगब ओकरा पसीन नञि हुअए। मजबूरी मे..

युवक : कह' की चाहै छी अहाँ?

युवती : कर' चाहै छी स्टोरी ।

युवक : व्हाट? (किछु सोचैत अछि) हूँ .. फिजिकली इनेबल, मेंटली शार्प, लिटरेट .. काज कएल जा सकैय'।

युवती : छपला स' जे पाइ भेटत, तकरा मे स' आधा एकरा द' दबै। ओकरो लागतै जे भीख स' अलग किछु ओकरा भेटलैय'। आत्मविश्र्वास बढ़तै ओकर।

युवक : यदि हम फिल्म धरि सोची त'? 'अ हैंडीकैप्ट लिटरेट'..। नीक बनि गेल त' अवार्ड-तवार्ड सेहो..

(अवार्डक नाम पर युवतीक ऑखि चमकैत छै।)

युवती : नॉट अ बैड आइडिया।

(दुनू मंगतू लग पहूँचइत छथि।)

युवक : रौं, नाम की छौ तोहर।

(मंगतू चेहाक' ओकरा दिस देखै छै। किछु बोलबाक होइ छै, मुदा दोसरे पल मुंह बन्न आ चेहरा कठोर क' लेइत अछि।)

युवती : अहीं स' पूछि रहल छी जे की नांव भेल।

(मंगतू एखनो चुप अछि। मुदा ओकरा मे एकटा नाराजगी भरल उत्तेजना बढ़ि रहल अछि।)

युवक : सुन! हम सभ तोरा पर किछु काज कर' चाहै छी। अई में तोहर सपोर्ट चाही। माने सहायता।

युवती : अहाँक नाँव, गाम, ठेकान। अहिठाँ कोना पहुंचलहुँ..

(मंगतू एखनो दुनू दिस ताकिए रहल छै। युवक मे रोष पैदा होई छै। युवती स')

युवक : ही इज डफर। एक्टिंग। नोइंग हिज इंपोर्टेंस। लेट्स मूव।

युवती : बी पेशेंट। ही विल टॉक। (मंगतू स') भाई, कनेक अहाँक सहयोग चाही। अहीं पर हम सभ काज कर' चाहै छी। दुनिया के बताब' चाहै छी जे अहाँ के छी, कोना

छी। लोक-आओरक धेयान खींच' चाहै छी- अहाँक गुण पर, जे अई हालति में रहियो क' अहाँ पढ़लौं।

मंगतू : (अकस्मात) अहाँ के कोना बूझल?

युवती : देखै छियै ने। अबैत-जाइत। अखबार पढ़ैत, लोक आओरक चिट्ठी पढ़ैत।

मंगतू : (एकटा धार मे बहैत जकाँ) हुँ बहुत लोक छै, जे पढ़' नञि जानै छथि। हुनका गाम आओर स' चिट्ठी अबै छै। ओ सभ हमरा लग अबैत अछि। हम पढ़ि दै छियै। हमरा लिखहू अबैय'। हे, (बाम हाथ देखबैत) देखियौ। पहिने त' अच्छर खराब होई छल। आब कने ठीक भ' गेलै। मुदा, अहाँ कियै पूछि रहल छी ई सभ?

युवक : कहलियौ ने रे जे तोरा पर एकटा स्टोरी करबाक अछि।

मंगतू : ओहि स' हमरा फेदा? हमरा भीख माँग' से' छुट्टी भेंटि जाएत? कोनो काज भेंटत हमरा? अहाँ त' अपन काज बना लेब आ लाति मारि क' चलि देब। चिन्हबो नञि करब।

युवती : एहेन गप्प नञि छै..

मंगतू : त' केहेन गप्प छै? सभ किओ अपना मतलब साध' लेल अबैत अछि। अहूँ आओरक मतलब अछि। नञि त' .. अहाँ दुनू त' रोजे ई बिल्डिंग मे अबै छी। लोक आओर त' एक नजर एम्हर मारियो लेइत अछि, अहाँ दुनू त' सेहो नञि ..

युवती : एहेन किछु नञि छै। कहियो न कहियो, ककरो न ककरो नजरि त' पड़बे करै छै। अहाँ पर आई गेल आ हमर दुनूक गेल। भ' सकै छै जे हमर लेख पढ़ि क' किओ अहाँ स' भेंट कर' आबथु, गप्प करथु। भ' सकै छै, जे अहाँ के अपना जिनगीक कोनो राह भेंटि जाए।

मंगतू : कोनो एहेन नञि आओत जे हमरा बाट देखाओत। हँ, भीखक चवन्नी -अठन्नी बीग' लेल अबस्से आबि जाएत। काज कोनो नञि देत। की करब अहाँ सभ जानि क' जे हम के छी, कत' स' आएल छी..

युवक : एना मोन हारला स' किछु भेटै छै की? (युवती दिस) ई कहबे केली ने जे भ' सकै छै, हमर स्टोरी पढ़ि क' किओ तोरा कोना काज-धन्धा देइये दै। अरे आसे पर त' ई दुनिया ठाढ़ छै। तों नञि बाजबें त'..

युवती : ईहो भ' सकै छै ने जे अहांक कथा पढ़ि-सुन क' दोसरो लोक आओर मे नव जिनगीक संचार हुअए। अहां त' उदाहरण भ' जाएब। प्रेरणा पुंज..

मंगतू : कहबाक गप छै ई सभ। नञि किओ आएत, नञि हमरा काज देत। हम अहिना भीख मँगैत, मँगतुआ कहबैत मरि जाएब- अही ठाँ, अही फुटपाथ पर। मुन्सीपाल्टीबला आओत, अपना गाड़ी मे ल' जा क' कतहु देह के ठेकान लगा देत.. भिखमंगे बनल मरि जाएब। (युवक स') कहू त', हमर कोन कसूर जे जनमते हम मोरी मे बिगा गेलहुँ। मात्र अही लेल ने जे हम नजायज छी। मुदा कहू जे छोट-छोट, भोला-भाला बच्चा सभ कोना क' नजायज भ' गेलै। (तेज नजरि स' युवती के देखै छै।)

युवती : सही। कोनो नवजात नाजायज कोना भ' सकै छै?

मंगतू : सएह त'। नजायज त' हुनकर संबंध भेलै ने। आ सेहो नजायज कियैक? बच्चा जनमाएब कोनो नजायज कर्म छिकै ? तहन त' हे, ई पूरा दुनिये नजायज अछि। समाजक रीति-नीति नञि मानू त' सभ किछु नजायज.. ई समाज हमरा भिखमंगा बना देलक, ई नजायज नञि भेलै?

युवक : हूँ, बात मे दम छौ तोहर!

मंगतू : (जेना अतीत मे।) हम एहेन नञि छलहुँ। एकदम पूरा देह छल हमर, अहीं आओरक माफिक - दू टा पएर, दू टा हाथ। तीर जकाँ भगैत छलहुँ, लट्टू जकाँ नचैत छलहुँ.. घिर्र.. (लट्टू जकाँ गोल-गोल घुमबाक प्रयास करैत अछि।)

युवती : फेर?

मंगतू : फेर की? (रिजर्व होइत) छोड़ू! की रखल छै ऊ सभ मोन पाड़ि क'। नञि त' ऊ दिन घूरत आ ने हमर हाथे-गोर।

युवती : एना नञि बाजी। कहलहुँ ने हम जे हमर स्टोरी पढ़ि क' कोनो मातबरि, दयालु पहुँचि सकैत छथि अहाँक मदति लेल। भ' सकैछ, जे ओ अहाँक पएरे बनवा देथु। आइ-काल्हि खूब चलल छै ने जयपुरी लेग। देखैयो में एकदम असली लागै छै आ काजो एकदम असलीये जकाँ करै छै।

युवक : तों त' पढ़ल छें। पढ़नेही ही हेबें एकरा मादे।

मंगतू : (अही प्रवाह मे) हँ, सुधा चंद्रनक पएर जकाँ।

युवक : एकदम सही। यदि किओ तोरो पएर एना बनबा देलकौ त' तोहों हमरे सभ नाहीत चलि-फिरि सकबें.. मुदा ई त' बता जे ई सभ भेलौं कोना। जन्मे स' एहेन नै छें एखने कहलें..

मंगतू : (बीच ही मे) पूरा छलहुँ हम' एकदम अहीं सभ जकाँ। नान्हि टा छलहुँ छौंड़ा सभक संग खेलाए छलहुँ। अकास मे गुड्डी देखल हे.. ऊ.. बकाट्टा सभ गुड्डी लूट लेल पड़ाएल। हमहूँ पड़ेलौ.. भागलहुँ, भगैत गेलहुँ, भगैत गेलहुँ- होस छोड़िक'। नञि बूझ' में आएल जे सोझा स' बस.. (कनेक स्थिर भ' क') ई गणपत काका (केलावाला दिस इशारा करैत) छथि, सएह हमर माय-बाप

बनि गेलाह। अस्पताल ल' गेलाह, जतेक भ' सकलै इलाज पानी करौलन्हि!

युवती : आ अहाँक माय-बाप?

मंगतू : दाइ, कियैक कटल पर नून बुरकै छी? अरे हम भेलहुँ हरामी, सुअरक औलाद! हमरा आओरक माय-बाप कोन? एतबे हिम्मति रहितियैक त' जनम के बाद हमरा मोरी मे त' नञि ध' देने रहितियैक'ने। आब त' गणपते कक्का हमरा लेल माय-बाप सभ छथि।

युवक : चलू, जान त' बांचि गेलौ ने!

मंगतू : (फेर भड़कैत) ई जान? ई जिनगी? अहाँ के चाही एहेन जिनगी? त' ल' लिय' ने! खुशी-खुशी द' देब। मुदा नञि। अहीं के कियैक, ककरो नञि चाहीं एहेन जिनगी। ई कटल-भांगल, लोथ, अपाहिज जिनगी। अरे साहब, कहब बहुत आसान छै। अपन जीह छै ने।

युवती : कह' सुन' स' मोन हल्लुक भ' जाए छै।

मंगतू : नेनपने स' भीख मांगब हमरा बड़ड अक्खजि बुझाइत छल। नेनपनि मे, जाधरि हाथ-गोर सही सलामति छल, एम्हर-ओम्हर काज क' क', टिकुली-ककही बेचि क', कप प्लेट धो-धो क' जिनगी बसर केलहुँ। सुनने छलियै जे काज कर' बला धिया-पुता लेल राति मे स्कूल चलै छै.. सोचने छलहुँ जे नाम लिखा लेब। पढ़ि-लिखि जाएब त' कोनो छोट-मोट काज भेटि जाएत। मुदा.. ऊ गुड्डी अपने की बकाट्टा भेलै, हमर जिनगी के सेहो बकाट्टा क' देलकै। आनक आसरे भ' गेलहुँ हम। मांगि-चाँगि क', खेनाई! छिया-छिया, कतेक गर्हित कर्म छै ई। कएक बेर सोचल, जे नञि माँगब भीख- लग मे फेंकल पाई सेहो नञि उठबै छी। घिन अबैय'। मुदा, ई पापी पेट घिन स' बढ़ि क' भ' जाइए।

युवक : नाम की भेलौ तोहर!

मंगतू : नाम त' ओकर होई छै ने यौ बाबू, जकर माय-बाप रहै छै! रोडबला लोकक कोनो नाम होई छै.., जे-जे कह' लागल, सएह नाम भ' जाइत छै.. माँगि-चाँगि क' खेने सन्ते लोक आओर हमरा मंगतू कह' लागल। मंगतू स' मँगतुआ। (करूण हंसी)

(मंगतूक गप्प युवक-युवती नोट-बुक मे नोट करैत रहैत छथि।)

मंगतू : आओर साब, हम जहन..

युवक : (अचानक नोट बुक बंद करैत) अच्छा मंगतू, फेर होइत अछि भेंट-घाट।

(युवती सेहो नोट-बुक बंद क' देइत अछि। मुदा ओकर आँखि मे अथाह प्रश्न व आश्चर्यक भाव छै। मंगतू हतवाक युवक दिस देखिते रहि जाइत अछि। ओ किछु बाजबाक प्रयास करैत अछि, मुदा ओ दुनू ओहिठाँ से उठि जाइत छथि। ओ दुनू मंच स' प्रस्थान करैत, मंच क' दोसर भाग स' पुन: अबै छथि, गप्प-सप्प करैत। प्रकाश ई दुनू पर । मंगतू फ्रीज अवस्था में..)

युवती : बाप रौ बाप! कतेक सीरियसली गप्प करैत छलै। कतेक कन्सर्नें भ' क! संबंध नजायज होई छै, बच्चा नञि! ..कतेक आसानी स' हम सभ अपन भूलक चद्दरि दोसराक माथा ओढ़ा अबैत छी। आ, बना लेइत छी अपना के पाक-साफ। ई मंगतू, कतेक भाव भरल छै एकरा भीतर। कतेक नीक जकाँ सोचै छै। आ हम सभ पढ़ुआ लोक, मात्र एकटा भीखमंगा बूझि ओकरा टालि जाइ छी।

युवक : हे! बेसी भावुक नञि बनी। स्टोरी कर' आएल छी, ओकर जिनगीक रामनामी चद्दरि ओढ़' नञि। बूझि पड़ैत अछि, किछु बेसीए प्रभावित क' देलक ओ लुल्हबा। कोनो

चक्कर-उक्कर त' शुरू नञि भ' रहल अछि.. एकदम फिल्मी स्टाइल मे।

युवती : शटअप! अहाँ सभ के एकरा अलावे आओर सूझबे की करत?

(दुनूक प्रस्थान। प्रकाश मंगतू पर। ऊ ई दुनू के जाएत देखैत छै, किछु.. किछु असंतुष्ट, किछु-किछु संतुष्ट।)

मंगतू : चलि गेलाह! भरि पोखि गप्प भेबो नञि कएल आ.. (संतुष्टि क भाव स) तइयो पहिल बेर आई कोनो पढ़ल लिखल लोक स' गप भेल। मोन त' होइ छल जे बतियबिते रही। मुदा.. बीचहि मे.. भ' सकै छै, जतेक सूचना चाही, भेंटि गल हुअए.. तइयो.. जतबे गप्प भेल, नीक लागल.. हम त.. हमरा त' मोन होइते रहैत अछि जे हम एहेन-एहेन लोक सभ स' गप्प करी - देस, दुनिया, समाज आ अपना पर। (उल्लसित स्वर मे) गणपत कक्का! देखलहुँ अहाँ। ओ सभ हमरा स' गप्प केलाह। पत्रकार सभ.. पढुआ लोक सभ। आब जरूर हमर जिनगी बदलि जाएत। हमरा पएर भेटत, काज भेटत.. कतेक सोहाओन समय हेतै ओ..

(गणपत काका केराक चंगेरी उठौने ओकरा लग अबैत छै आ सभ' स' उतरल केरा ओकरा दै छै।)

गणपत : ले, खो!

मंगतू : काका.. हमर गप्प नञि सुनै छी !

गणपत : सभ सुनै छी। पत्रकार छथि। हुनका आओरक काजे छै दोसरा आओरक जिनगी बनेनाइ।

(केरा देइत) ले, खतम क' ले त' हम जाइ..

मंगतू : कत?

गणपत : घर! बेटी बाट तकैत होएत। सीधा-पानी ल' क' जेबै, तहने ने चूल्हि मे आंच पजरतै।

मंगतू : (नमगर सांस लेइत) हँ, घर! अई ठाँ सभ के नीक-बेजाय, पैघ, छोट- अपन घर छै, परिवार छै, धिया-पुता छै, ओकरा आओर लेल ओकरा सभ के घुरबाक छै। पच्छिम दिस डूबैत घुरैत सुरूज जकाँ। आरामक ओसांसि लेल, परिवारक बीच अपन सुख-दुख बाँट' लेल।

गणपत : (ओसांसि भरिक') हँ रौ, घर आ परिवार! टिनाक चदरा, पोलथीन स' छारल चार बित्ताक घर, जाहि मे ठामें-ठाम भूरि। सेहो चार-छओ मास पर मुंसीपाल्टीबला खसा दै छै। सभ बेर के तोड़ि-फोड़ि में पांच मे स' टीन टा चीज गायब भ' जाइ छै। बेटी जवान भ' गेल। लोक आओर घूरैत रहै छै, हम किछुओ नञि क' पबै छी। (उठि क' बिदा होइत अछि। प्रकाश ओकरा पाछां। एक कोन्टा मे माथ पर स' चंगेरी उतारबाक अभिनय। संगहि पार्श्व स' 'ऐ चमेली', गै छप्पन छुरी, कोम्हर जाइ छैं करेजाक छप्पन टुकड़ी क' के', 'एम्हर आ, एक्कहि राति मे रानी बना देबौ' 'ऐ, आती क्या खंडाला' सनक स्वर।)

.. बेटा जवान भ' गेल अछि। मुदा चारि टा पाइ कमेनाइ अपना इज्जत पर बट्टा बूझैत अछि।

बेटा : (घुसैत) रौ बुढ़बा, भरि दिन सेठ जकाँ बइसल रहले कि किुछ बेचबो केलें। (नेपथ्य दिस मुंह क' क') किओ अछि? किछु छैहो खाए-पिय' लेल कि सभ ठुंसा देलही ई महाराजा के।

(नेपथ्य दिस स' 18-19 वर्षक एकटा लड़की हाथ में थारी ल' क' अबैत अछि। एम्हर स' ऊ थारी ल' क' अबैत अछि आ दोसर दिस स' दू-तीन टा गुंडा सनक लोक अबैत अछि आ लड़की के अश्लील रूप स' घूरैत

अछि। लड़की भाई के थारी देइत अछि। भाइ थारी देखिक' फेंक देइत अछि।) ई सूखल-टटाएल रोटी आ पानि जकाँ तीमन! ई खाएक छै?

गुंडा 1 : रौ राजू! तोंहो कत' आबि जाइ छै मगजमारी कर' लेल। रौ मीता, चल हमरा संगे। तोरा तंदूरी चिकन खुएबौ। मुर्गीक टंगड़ी (बोतलक इशारा करैत) एकदम मेम चीज.. मोन खुस भ' जेतौ.. मुदा..

राजू : मुदा की?

गुंडा 2 : किछु लेब' लेल किछु देब' पड़ै छै ने यार!

राजु : हमरा लग अछिए की? ई बुढ़बा राखलए किछु हमरा लेल?

गुंडा 3 : नगीना रौ नगीना। एकदम पटाखा छौ तोहर घर मे आ कहै छैं जे बुढ़ऊ किछु छोड़बे नञि केलकौ अछि?

गुंडा 1 : एहेन मोट-ताज मुर्गी । कहियो हमरो टेस्ट करा यार!

(निर्लज्ज हंसी। लड़की सुकुचाक' भीतर चलि जाइत अछि। गणपत खिसिया क' ओकरा दिस बढ़ैत अछि, मुदा बेटा बीचहि मे छेकि लेइत छै।)

बेटा : हे हमर परम पूज्य पिताजी! कत' जा रहल छी अहाँ? ई सभ के छथि, बूझलए अहाँ के? .. ई सभ हमर दोस्त छथि आ हमरा तंदूरी मुर्गा खुआब' ल' जा रहल छथि। (चिचियाक') रौ बुढ़बा, ला, निकाल, जे छौ तोरा ल'ग। (जबर्दस्ती ओकर पाइ छीनैत छै। गणपत चिकरैत अछि। ओकर चिकराब सुनि लड़की भीतर स' अबैत अछि आ बाप के बचाब' लेल बाप दिस भगैत अछि। एक गुंडा ओकर गाल छुबि लेइत अछि, दोसर ओकर हाथ खींचिक' बाहर ल' जाइत अछि। ई देख गणपत पाइ छोड़ि बेटी के बचाब' भागैत अछि। बेटा पाछाँ स' एक लात ओकरा

जमबैत अछि। गणपत मुंहक भरे खसैत अछि। बेटा समेत सभ कियो ठठाइत निकलि जाइत अछि। पार्श्र्व स' लड़कीक चिकरब आ गुंडा सभक अट्टाहास आ अश्लील प्रलाप सुनाइ दैत छै। तेज संगीत.. बेंजोक तेज ध्वनि हठात समाप्त होइत अछि। मंच पर घोर अंधकार आ सन्नाटा!)

* * *

दृश्य : 3

(प्रकाश मंगतू पर। ओ अखबार पढ़ि रहल अछि। पढ़ैत-पढ़ैत पसेने पसेने भ' जाइत अछि। ओ मुंह पोछैत, एम्हर-ओम्हर देखै छै.. फेर अटकि-अटकि क' पढ़ैत अछि..)

मंगतू : नवयुवती के साथ बलात्.. चार युवक.. नशे में.. भाई भी.. दो गिफ्तार.. दो अभी भी फरार.. (पसेना पोछैत अछि। हकला क' घबड़ाहटि मे बजैत अछि) माने.. काल्हि.. कविता.. गणपत कक्का.. राजू.. (माथ पकड़ि लेइत अछि) बहीनक रखवार अपने स' ओकरा परोसि देलकै गिद्धक सोझा.. (चिकरैत अछि) .. कक्का, गणपत कक्का..

(आवाज सुनि किछु छात्र, किछु यात्री ओम्हर अबैत अछि सभ पूछैत अछि -- की भेलौ रौ? सपना देखै छही की? दिने मे सपना.. हँ, एकरा करैये के की छै? चौबीसो घंटा, आठो पहर सूतल रहौ,.. हमरा आओर जकाँ नञि छै ने.. छिछियाइत फिरू।)

(मंगतू कानि रहलए। कखनो अखबार स' माथ पीटैत अछि, कखनो बेबसी मे अपन केस नोचैत अछि।)

मरियो नञि जाइ छी हम। एहेन देह, एहेन जिनगी, एहेन समाज.. मरि कियै नञि जाइ छी हम। रे दैब.. आह रे दैब! कक्का यौ, गणपत कक्का..?

(भीड़ के काटैत गणपत बहिराइत अछि। मंगतू ओकरा देखतही भरि पांज ध' लेइत अछि आ कनैत अछि। कक्का पीठ-माथ सोहरबैत ओकरा भरोस दियबैत अछि।)

मंगतू : कक्का.. काल्हि.. काल्हि..

गणपत : की भेलौ बेटा?

मंगतू : कक्का.. कविता.. काल्हि..

गणपत : कत्त' घुरलौ बाऊ। दुनू मे स' किओ नञि। आँखिए मे राति कटलए।

मंगतू : कविता आब नञि आओत कक्का..

(गणपत प्रश्नवाची दृष्टि स' ओकरा देखैत अछि.. मंगतू अखबार ओकरा दिस बढ़ा देइत छै। गणपत अनपढ़क मुद्रा मे अखबार उनटैत-पुनटैत अछि.. एकटा यात्री अखबार ल' क' पढ़ैत अछि.. खबरि सुनि गणपत थहराक' खसैत अछि.. मंगतू फेर भरि पाँजि ओकरा ध' लइत अछि।)

गणपत : (विक्षिप्त जकाँ) रौ दैब रौ दैब.. मौगत द' दे रो दैब.. आब हम जीबि क' की करब.. (मंगतू के झोरि क') कहै छले ने तों जे हम सभ घर-दुआर, बाल-बच्चेदार, परिवारबला आदमी सभ छी। देख लेले नें? ईहे अछि घर आ ईहे अछि धिया-पुता। गै कविता गै.. हमर सोन सन बेटी गै.. रौ रजुआ.. रौ तोरा नरको मे ठौर नञि भेटतौ रौ..

(पुलिसक सायरन बजै छै.. सभ यात्री ओत' स' हटि क' बस स्टैंड लग ठाढ़ भ' जाइत अछि। किओ घड़ी देखैत अछि, किओ मोबाइल करैत अछि, किओ चोर नजरि स' मंगतू-गणपत दिस देखैत अछि, किओ अखबार स' पंखा करैत अछि.. छात्रक एक गोट टोली मे खुसर-फुसर करैत अछि।)

(पहिला दृश्यबला पुलिस अबैत अछि.. डंडा डोलबैत..)

पुलिस : रौ, गणपत तोंही छें?

गणपत : जी हुजूर।

पुलिस : चल थाना..

गणपत : हमर कसूर हुज़ूर।

पुलिस : सार नहिंतन! बेटी स' धंधा आ बेटा स' भड़ुआगिरी, आ पूछै छें.. चल थाना.. पता चलतौ जे की छौ तोहर कसूर..

(पकड़ि क' ठेलैत- ठालैत ल' जाइत अछि।)

मंगतू : साब! साब, हिनका छोड़ि देल जाओ। ई निर्दोख छथि।

पुलिस : (मंगतू के लात लगबैत) त' तोंही चल। रौ डाँड़ मे छौ बूता छौंड़ी सभ लेल! हट सार!

(मंगतू फेर बीच-बचावक प्रयास करैत अछि। पुलिस डंडा बरसाबइत ओकरा ठेलि देइत अछि। मंगतू मुंहक भरे खसल रहि जाइत अछि। पुलिस गणपत काका के पकड़ि क' ल' जाइत अछि। यात्री, जाहि मे किछु छात्र सभ सेहो छथि, बिटर-बिटर तकैत रहैत छथि। पुलिस के गेलाक बाद)

यात्री 1 : बाप रौ बाप! एहेन कलजुग! बापे बेटीबेच्चा।

यात्री 2 : अहूँ त'! जे पुलिसबाला कहि देलकै, पतिया लेलहुँ ने!

यात्री 3 : पुलिसक बात आ चूल्हिक पाद एक सन!

छात्र 1 : एतेक घमर्थन क' रहल छी। जहन पुलिस बुढ़बा के पकड़ि क' ल' गेलै, एकरा (मंगतू दिस) एतेक मारलकै, तहन त' नञि फ़ूटल बकार॥ पुलिस के जाइते देरी कि सभक लोल एक-एक हाथ नमगर भ' गेलै।

यात्री 1 : रौ, पुलिसक सोझा बाजक कोनो मतलब छै।

छात्र 2 : त' एखनि बाजबाक कोन अर्थ?

यात्री 2 : हे रौ, बूझल जे हम सभ किछु नञि बाजल। तों सभ त' छलें, युवा शक्ति, छात्र शक्ति! तोहें सभ कियैक ने बाजलें रे!

यात्री 1 : (मंगतू दिस) हम सभ त' बाउ रौ, जिनगीक दोग मे फँसल बूँट छी। सेठ साहूकार कैंचीक मध्य फँसल कापड़ि। पुलिस-दारोगा करबाक समय कत'?

छात्र 2 : जहन अपना पर आओत तहन?

यात्री 3 : तहन देखल जेतै।

छात्र 3 : माने अपना पर पड़ल मोसीबत पहाड़, आ आनक फूसि-फासि?

यात्री 1 : तैं ने कहलियौ रौ भाय जे तों आओर त' छें छुट्टा बरदि। ने घर गिरस्थीक चक्करि ने नौकरी पातीक झंझटि, ने बाल-बच्चाक पिरसानी। ऊपर स' नेता बनबाक मोका फ्री-फंड मे। (बस देखैत.. हे हमर बस आबि गेल' कहैत चढ़बाक अभिनय करैत अछि। चढ़ि गेलाक बाद सोर पारिक' छात्र के कहैत अछि -) रौ, मोन राखिहें हमर गप्प। की ठेकान, छात्र नेता स' मुख्य मंत्री आ फेर केंद्रीय मंत्री भ' जेबें। घरोवालीक निस्तार भ' जेतौ। हे ले (पाइ फेंकैत अछि..) ऊ भिखमंगाक दबाई करबा दिहें।

(छात्र सभ तमतमाएल ठाढ रहैत छथि, अन्य यात्री सभी हंसैत अछि। किओ ठहाका पारि क', किओ मुंह तोपिक! किओ मुसिकियाइत पेपर पढ़बाक त' किओ समय देखबाक अभिनय करैत अछि। सभक बस एकाएकी अबैत छै, सभ ओहि मे सवार भ' भ' चलि जाइत अछि। जाए स' पहिले सभ किओ चवन्नी, अठन्नी, सिक्का मंगतू दिस फेंकैत अछि आ छात्र आओर के इलाज क तगेदा करैत अछि।)

छात्र 1 : ओह! रहब मोश्किल भ' रहल छै! मोन उजबुजाइय ई सभ देखि क'।

छात्र 2 : सपना देखै छी, देखैत रहै छी। कहियो किओ सपना देखल त' आइ देश आजाद भेल। आजाद देश लेल सपना देखल जे सभके जीबाक, रहबाक, काज करबाक

समान अधिकार अछि। किओ भूखल-पियासल, बेरोजगार नञि रहत। पढ़ाई रोटीए जकाँ अनिवार्य रहतै। मुदा भेटलै की? आजादीक एतेक बरखक बादो वएह भूख, गरीबी, बेरोजगारी..

छात्रा 1 : भ्रष्टाचार, बेईमानी, सत्ताक अपराधीकरण। जिनगी जीबाक विवश्ता..

मंगतू : (कने जोरगर आवाज मे, जाहि स' छात्र सभ सुन सकथि।) रौ हाथ-गोर रहितहु कियैक एना बाजि रहल छें।

(छात्रक ध्यान ओकरा दिस जाइत छै। ओ सभ ओकरा ल'ग अबैत अछि)

छात्र 1 : भाई, हाथे-गोर रहला स' समस्याक समाधान नञि भ' जाइ छै।

छात्र 2 : सभ ठाँ पाई चाही, पैरवी चाही। देख भाई, लोक आओर हमरा सभ के कहै छथि जे हम सभ युवा शक्ति छी, देशक भविष्य छी।

छात्र 3 : रौ, वास्तविकता त' अछि जे हमरा आओर के अपने नञि बूझल अछि अपन भविष्य।

छात्र 1 : माय-बाप सपना काढ़ै छथि जे बेटा सभ पढ़ि-लिख क' हमर दुख दूर करत।

छात्र 2 : हम सभ त' हुनकर दुखक भीजल चिपरी मे चिनगी लगाक' आबि जाई छी, रसे-रसे सुनगैइत रहू।

छात्र 3 : करैत रहै छी - अपन अरमानक खून, माय-बापक सपनाक हत्या। रौ, तों त' खाली देहे स' अपाहिज छें। ई व्यवस्थाक हाथे हम सभ त' तन-मन दुनू स' अपाहिज छी।

मंगतू : मुदा भाई, ई व्यवस्था की छै। ककर छै, के बदलत?

छात्र 1 : (रोब स') हे, नेता जुनि बन। दू अच्छर अखबार पढ़िक' अपना के प्रधानमंत्री नञि बूझ।

(पहिलुका पत्रकार युवक-युवतीक प्रवेश)

युवक : अरे वाह, आई त' एकरा लग छात्र सभ सेहो अछि। गुड। चलू, एकरो आओर के कवर क' लेइत छी।

युवती : हम त' आइ काल्हि रोजे देखै छी, किओ न किओ एकरा लग बनले रहैत छै।

युवक : ई छैहे तेहेन कमालक चीज। हाथ नञि, पएर नञि, घर-परिवार नञि, शिक्षा-संस्कार नञि । तइयो पढ़ुआ छै, अखबार पढ़ै छै। चिट्ठी-पत्री लिखै-पढ़ै छै।

(दुनू सटि क' ओकरा आओरक गप्प सुनैत छथि। छात्र सभ मंगतू लग स' हटि क' बस स्टॉप दिस बढ़ैत छथि।)

छात्र 1 : कह' लेल जे कही। भने ओकरा झलकारि दही। हमर गप्प मे सेहो तों सभ दर्शन ताक' लाग। मुदा, कखनो लगैत अछि जे एकरे जकाँ हम आओर सेहो भेल जाइ छी। लोक आओर भेल जाइत अछि, देश-दुनिया बनल जाइत अछि।

छात्र 2 : रौ बाप, हे, पहिनहीं परीक्षा खराब भ' गेल अछि। आब ई दर्शन-तरसन छाँटि क' माथ नञि खराब कर।

छात्र 1 : सुन त'! एकरा देखिक' तोरा नञि बुझाइ छौ जे एकर देह-देह नञि, ई समाज आ ओकर व्यवस्था छै। ई समाज, ई व्यवस्थाक माथ छै, माथ मे दिमागो छै, जे सोचैत त' छै, मुदा किछु करै नञि छै। करबाक लेल सक्रियताक हाथ-गोर चाही, जे एकरे जकाँ ओकरो नञि छै। तैं एकरे जकाँ पड़ल रहै छै - लोथ भेल।

छात्र 3 : (छात्र 2 आ 3 माथ ठोकैत छथि।)

गेलौ रौ गेलौ। पूरमपूर गलौ। आब ई हमरा आओर के त' पकेबे करतौ, तोरो आओर के नञि छोड़तौ। (युवक-युवती के देख) नीक भेल। आबि गेलहुँ। सुनू आब अरस्तूक गप्प। (दुनू तेजी स' निकलि जाइत अछि। छात्र 1 ओही ठाँ अछि।)

युवक : देखू! पत्रकार छी हम आओर आ पत्रकार जकाँ बतियाइत छथि ई आओर।

युवती : हमरा आओर त' छात्र सभक संगे ओकरा कवर कर' चाहै छलहुँ।

युवक : से त' रहिए गेल।

युवती : ई एकटा अछि ने! एकरे कवर क' लेइत छी।

युवक : (चिढ़िक') त' निकालू साड़ी आ क' लिय' कवर।

युवती : शटअप! फालतू गप्प नञि करी। हमर संग साथ नञि नीक लगैत अछि त' अहाँ जा सकै छी। हम अपन काज क' लेब।

युवक : ककरा संगे? ऊ लोथक संगे की ई देशक भविष्यक संगे।

युवती : (चिकरैत) बंद करू ई बकवास। अहाँ जर्नलिस्ट छी। बूझै छी जर्नलिस्टक माने? (ओही उत्तेजना मे) जर्नलिस्ट माने उन्नत विचारक स्वामी, खुलल दिल आ दिमागवाला व्यक्ति, जनताक विचार वहन कर' बला, व्यवस्थाक छेद मे आंगुर द' क' देखाब' बाला। मुदा अहाँ त' ईर्ष्या आ द्वेष स' जरैत संठी छी मात्र। दुर्गंध स' भरल तौला। दुनियाक चौथा आवाजक नाम पर भडुआगिरी कर' बला। छि:।

(युवक नाराज भ' क' यवती दिस घूरैत अछि। युवतीक चिकरब सुनि बाहर गेल दुनू छात्र घूरि अबैत अछि। छात्र 1 पहिनही स' अकबकाएल बेरी-बेरी स' दुनू युवक-

युवती के देखैत अछि। युवक-युवतीक हाथ घीचि क' मंच क दहिना भाग मे ल' जाइत अछि। छात्र सभ मंचक बाम दिस छथि आ मंगतू बीच मे। मंच पर अत्यन्त मद्धम प्रकाश। अचानक युवक-युवती पर हाथ उठबैत छै। सभ चौंकि उठैत अछि। युवती खसल अछि। मंगतू हड़बड़ाक' ओम्हर बढ़बाक प्रयास करैत अछि, मुदा खसि पड़ैत अछि। छात्र सभ युवकक चेहरा देखि ओहि ठाँ थकमकाएल रहि जाइत छथि। पार्श्र्व स' समवेत स्वर में ईको साउन्ड इफेक्ट मे ई पंक्ति चलैत अछि।)

किओ किछु नञि क' सकैत अछि।
किओ किछु नञि कहि सकैत अछि।
बिकाएल बजार मे मानवताक मूल्य
बंधक अछि माथ
हाथ गोर भांगल, धड़ शिथिल
जागू, जागू, तखने होएत विहान
नव सूरज रचत इतिहासक नव काल खंड।

(प्रकाश शनै: शनै: फेडआउट होइत अछि।)
(मध्यांतर)

अंक : 2

दृश्य : 1

(बाजारक दृश्य। फेरीबाला रूमाल, टिकुली, सेब, नारंगी, खिलौना सभ बेचबाक आवाज नेपथ्य स' - 'ऐ बच्चा के खेलौना, साढ़े बीस रूपैया, दौग-दौग क' ले, जाऊ, दीदी, काकी, भैया,' खसि गेल खसि गेल, पेंटक दाम खसि गेल', हरेक माल 30 रूपैया, 30 रूपैया, 30 रूपैया' आदि।)

(प्रकाश शनै-शनैः मंगतू पर केन्द्रित होइत अछि।)

मंगतू : ओह, ई हल्ला-गुल्ला! ई भीड़, ई धक्का-धुक्की!.. नीक लागै छै। जिनगी चलि रहल छै अई सभ मे.. ई जगह.. बरगदक नाहित.. हमरा सन-सन कतेक लोकक आसरा.. कखनो, कखनो त' हम सड़क पर नजरि जमा देइत छी.. ओह खाली पएरे-पैर.. दौगैत-भगैत गोरे-गोर.. कनेक ओकरा स' ऊपर त' दायाँ-बाम डोलैत हाथ.. कनेक ओकरा स' ऊपर त' माथे-माथ.. कारी-कारी केस, स्त्रीक माथ, पुरूषक माथ.. सभक लक्ष्य अपना-अपना गंतव्य धरि पहुँचबाक, रहि जाइ छी त' हमी - लोथ, नांगरि., लूल्हि.. अही के अही ठां.. लोक आओर कहैत रहैत अछि जे हम बड़ड भगमंता छी.. बइसल-बइसल पाइ भेंटि जाइत अछि.. कोना क' हम बुझाबी जे हमरा भीख नञि, काज चाही काज। .. (शून्य मे चिकरि क') रौ, हम भगमंता छी त' तोहो सभ कियैक ने बनि जाइ छें हमरे जकाँ भगमंता.. (विक्षिप्त जकां हंसैत अछि) .. अरे, सभ हमरे जकाँ बनि जाएत, त' फेर कमाएत के.. हमरा आओर पर भीखक नजरि आ चवन्नी, अठन्नी फेंकत के?

.. हं, बूझल। ई सभ चलैत रहौक, तकरा लेल साबुत लोकक भेनाई जरूरी छै.. आ ओ सभ पुण्य कमाबैथि, तकरा लेल हमरा आओरक रहनाई सेहो ..

(मंगतू जहन ई बाजि रहलए, दू-तीन टा हिज़ड़ा ओम्हर अबैत अछि। सभक नजरि मंगतू लग छिड़ियाएल पाई पर छै। सभक के आँखि मे लालच छै।)

हिजड़ा 1 : की राजा! की भेलौ रौ? सूखल गरी जकाँ मुंह कियै बनेने छें? अरे हाय, हाय, तोरा देखि क' हमरा त' किछु किछु होबैत अछि (गबैत अछि) 'क्या करूँ हाय, कुछ-कुछ होता है।'

मंगतू : (अपनही धुन मे) धिया-पुता सभ स्कूल-बैग ल' क' स्कूल जाइत अछि.. कतेक नीक लगै छै.. हम नान्हि टा स' जवान भ' गेलहुँ, मुदा स्कूलक मुंह..

हिजरा 2 : त' की भेलौ रौ राजा। अपना ओहिठां बहुत रास लोक स्कूलक मुंह देखने बेगर मरि जाइत अछि। हमरे आओर के देख। मुदा फ़िकिर नईं। हमरा आओर खुशो छी आ हे देख, तोरा लेल गीतो गाबि रहल छी।.. (गबैत अछि)

"सैंया दिल में आना रे, आके फिर ना जाना रे,
हो आके फिर ना जाना रे, छम-छमा-छम-छम!"
(अथवा कोनो आधुनिक गीत)

मंगतू : हमहू कहियो ई चाकर-चिक्कन रोड पर चलि सकब! बस-ट्रेन में चढ़ि सकब। अपना कमाई स' बसक टिकट कीनि सकब! .. भ' सकै छै.. कोनो मददगार आबि क'.. मुदा, की भेटत कोनो एहेन।

हिजड़ा 3 : चल रौ, हम बनि जाइ छियौ तोहर खुदाई खिदमतगार। चल, चल, हम सभ तोरा ल' क' सनीमा जेबौ, चाट-पकौड़ी खुएबौ (गबैत अछि)

"चौपाटी जाएंगा, भेलपुरी खाएगा, पीछा न छोड़ेंगा हम,

गाना बजाना, खाना-पीना, गाड़ी में होंगा सनम।"

(सभ मिलिक' मंगतू के झोरैत अछि। मंगतूक धेयान टूटैत छै।)

हि. 1 : की रौ हीरो। एना अभिषेक बच्चन जकाँ मुंह कियैक लटकौने छे?

हि. 2 : रौ, तों कोनो भीख थोड़बे मांगै छें। तोरा देखितही मातर लोक आओरक' हाथ अपने आपे अपन पॉकिट दिस बढ़ि जाइ छै।

हि. 3 : हमरा आओर स' नीके छें रे। देख, तोहर हाथ-गोर नञि छौ, तइयो तों आदमी कहबैत छें - आदमी, मरद। हमरा आओर के अछि ई चारू हाथ-गोर! तइयो एक गोट पहिचान नञि अछि। तैं (ताली बजबैत अछि) कहबैत छी।

हि. 1 : सिगनले-सिगनले, रोडे-रोडे भीख मंगैत फिरै छी। हमरा आओर के देखितही बाबू-मेम सभ सीसा चढ़ा लेइत छथि गाड़ीक।

मंगतू : मुदा हमरा भीख नञि चाही। हमरा काज चाही।

हि. 2 : (हंसैत) से तोरा भेंटतौ नञि! कह, त' स्टाम पेपर पर लिखि क' द' दियौ। (गबैत अछि) 'कोरे कागज पे मुझसे करा ले सही।' 'अरे हमर चिक्कन-चुनमुन राजा, हमर छैला, ई सनी देओल जकाँ डकरै स' तोरा काज भेंट जेतौ। भेंटल हमरा आओर के ? तोहर त' हाथ-गोर नञि छौ, हम्मर त' अछि। मुदा दोकानदार बाजल - रौ बाप

रौ बाप! हे पानि मे आगि लगाब' लेल हमही भेटलियौ रौ? तोरा देखि क' त' गँहकी पराइए जेतौ। फेर बिक्री-बट्टाक की हएत।

हि. 1 : हम ऑफिस-ऑफिस केहुरिया काटल। सभक एक्के टेर-पढ़ल-लिखल छें? डिग्री छौ?

हि. 2 : सोचल, अपने कोना धंधा-पानी आरंभ करी त' -पूँजीए नञि (करूण हंसी) घर मे मुर्गी नञि, कीने चलल मसल्ला।

हि. 1 : एखनि नीक भ' गेल अछि। रबि क रबि सभ दोकान पर रेट फिक्स अछि- एक रूपैया फी दोकान। (हंसैत अछि) फ़ी रूपैया, फ़ी दोकान, फ़ी छक्का । रौ, तोरा त' अठन्नी, रूपैया दू रुपैया डेली भेटै हेतौक। हमरा आओर के त' एक रूपैया फी हफ्ता, फी छक्का। देख, सभ किछु अछि-हाथ गोर, नाक-आँख, मूड़ी, दिमाग।

हि. 2 : मुदा सभ किछु रहितहु किछु नञि छी हम सभ.. ने मनुक्ख, ने कुकुर।

हि. 1 : बस एक रूपैया फी हफ्ता, फी छक्का (गबैत नचैत अछि। शेष दुनू ओकरा संगति देइत अछि) एक रूपैया मे.. एक रूपैया मे, पूड़ी खाऊं, जिलेबी खाऊं, नरेटी फाड़ि क' तान लगाऊ.. एक रूपैया मे।

(नचैत गबैत ओ सभ मंगतूक माथ, बाल, मुंह छुबैत अछि, चूमैत अछि, नाच' लेल उठाबैत अछि। मंगतू सेहो प्रयास करैत अछि। पार्श्र्व स' नृत्य प्रधान संगीत तेज होइत अछि.. नाचबाक प्रयास करैत-करैत मंगतू खसि पड़ैत अछि। सांस सामान्य भेला पर।)

मंगतू : हँ रौ, सही कहै छें तो सभ। अई ठाँ त' लोक-आओर अठन्नी - टाका, में पुण्य कीनैत छथि त' अपना आओर के काज द' क' किओ अपन पांच सौ, सात सौक खारा

कियैक करत? लोक आओर त' इएह बूझैत छथि ने जे लोथ, लूल्हि-नांगड़ि. कोन काजक? तोरा आओर स्त्री-पुरूष नञि भेलें त' समाज मे तोहर गिनतीयो नञि! अरे किओ पूछल हमरा आओर स' जे हम सभ.. हम सभ की सभ क' सकै छी। अरे, किओ करबा के त' देखौ जे हम सभ की नञि क' सकै छी!

हि. 2 : (हंसैत आ थपड़ी पीटैत) की सभ क' सकै छें रे? साला, दगेबाज, हमरा संगे प्रेम बना सकै छें! रौ सार.. (चिढ़बैत अछि। मंगतू पहिने खिसियाइत अछि, फेर हंसि पड़ैत अछि।)

मंगतू : बनेबौ रौ, बनेबौ, मुदा पहिने अखबार त' पढ़' दें। भिन्सर स' नञि भेटल। नञि त' रामआसरे भाइ आ नहिए किसुनदेवे भाइ आइ अखबार देलैन्हि.. चली, अपनही स' ल' आनी। भ' सकै छथि, जे बेसी काज हुअए हुनका आओर के..

(मंगतू अखबारक औफ़िसक प्रवेश द्वार धरि अपना के ल' जाइत अछि। द्वार पर किसुनदेव आ रामआसरे अति सावधानक मुद्रा मे ठाढ़ छथि।)

किसुन. : आई सीएमडी साहेब आब' बला छथि।

राम. : हँ, तैं देखहक नें, सभकिछु कतेक चकाचक छै.. फिट-फाट.. फस्ट किलास।

किसुन. : आई त' सभ स्टाफ सेहो आएल अछि। कोनो गैरहाजिर नञि ।

राम. : सुनल जे आइ सीएमडी साहेब सभ' स' भेंट करताह। मीटिंग करताह।

किसुन . : तहन त' अपनो सभ स' भेंट करताह!

राम. : भ' सकैत अछि।

किसुन : एहेन हेतै त' हम पलखति निकालि क' हुनका पएर छुबि कहबै, जे साहब.. हमरा कनकिरबा के कोनो नोकरी..

राम. : सपना जुनि देख.. ई एतेक बड़का लोक सभ.. अर्जी दइयो देबही त' अई हाथ मे लेथुन्ह आ ओहि हाथ स'..

(अही बीच युवक आ युवती पत्रकार अबैत छथि। दरबानक मुंह पर पहिचानक मुस्की अबैत छै। दुनू ओहि दुनू के नमस्कार करैत छथि।)

युवक : (भीतर जाइत) रामआसरे! की बात? वर्दी एकदम कलफदार। मूँछो-एकदम कड़क। मूछो के कलफ लगा देलही की?

राम. : (लजाइत) ऊ साहेब, आइ.. ऊ.. सीएमडी साहेब..

युवक : ओ हो.. तोरा संगे हुनकर मीटिंग छौ की? बढ़िया, बहुत बढ़िया (दर्शक दिस) देख रहल छी ने प्रशासन के। ओ तखने चुस्त-दुरूस्त नजरि अबैत अछि, जहन ओकर माय-बाप सभ अबैत अछि.. वरना.. (रामआसरेक एक दिसक मोछ के नीचा क' देइत अछि आ भीतर चलि जाइत अछि। ओकरा गेलाक बाद रामआसरे अपन मोछ पूर्ववत करैत अछि।)

(मंगतू ताबैत द्वार धरि पहुँचि जाइत अछि। दुनू दरबान के देखि क' मुस्काइत अछि। मुदा दुनू ओकरा दिस ध्यान नञि द' क' मुस्तैदी स' अपन ड्यूटी क' रहल अछि। मंगतू अपन एकलौता हाथ स' सलाम ठोकैत अछि।)

मंगतू : रामआसरे भाई? किसुनदेव भाई? आई त' बड्ड जोरदार लगि रहल छी दुनू।

(दुनू कोनो जवाब नञि देइत छथि)

मंगतू : बेरहटिया भ' गेलै.. अखबार नञि भेटल.. मोन बेचैन भेल अछि.. आ रामआसरे भाई.. कहियो हमरो ई ओफिस

भीतर स' घुमा दिय' ने। सुनै छी, बड़ड मोडन ओफिस छै.. कम्पूटर, त' की त' की सभ छै। अच्छा, अहीं सभक पुन्न परताप से पढ़ब सीखि गेलहुँ त' अहींक किरपे कोनो दिन ओफीसो..

(तखने गेट पर हलचल होइत अछि। 'साब आ गए'। 'हटो, हटो, रास्ता छोड़ो' आदि स्वर उभरैत अछि। सिक्यूरिटी अटेंशनक मुद्रा मे आबि जाइत अछि। रामआसरे आ किसुनदेव दुनू मंगतू के देखैत छथि, फेर पलखतिये मे दुनू मे जेना कोनो करार होइत अछि आ दोसरे पल मे दुनू मंगतू के घीचि क' गेट स' दूर ल' जाक' पटकि देत छथि आ झब स' अपना स्थान पर आबि क' ठाढ़ भ' जाइत छथि। एक गोट सूटेड-बूटेड साहेब कएक टा अधिकारी सभस' घेराएल अबैत छथि आ भीतर चलि जाइत छथि। दुनू हुनका खूब चुस्त, मुदा नमगर सलाम ठोकैत छथि। सीएमडी आ बाकी लोकके भीतर गेलाक बाद।)

राम. : यार किसुनदेव! ई नीक नञि भेलै।

किसु. : त' कइए की सकैत छलहुँ? सीएमडी साहेब आब' बला छलाह। ऐहेन स्थिति मे हम सभ एकटा लोथ.. नांगड़ि भिखमंगा स' गपियाइत रहितहुँ त'.. अपन नोकरी त' सोझे..

राम : तइयो.. आराम स' ल' जा सकै छलियै.. एना बोरा जकाँ पटकि देलियै.. की जान' चोटो-तोटो लागल हेतै..

किसुन : चल, चल देखि लेइत छियै..

राम. : नराज हेतैक ओ..

किसुन : अरे अखबार ल' क' चलै छी। ओकर नराजगी दूर भ' जेतै.. अखबार त' ओकरा लेल चरसो-गाँजा स' बढ़िक छै..

राम : पढ़ियो कतेक जल्दी लइत छै। पढ़ै की छै, घोखि जाइ छै, (गर्व स') हमही त' सिखेलियै ओकरा, अहिना एक दिन आएल छल आ बाजल छल.. हमरो अखबार पढ़ाएब सीखा दिय' ने भाई जी। हम मजाक केलियै -'की रौ, पढ़ि क' की बनबें? शिक्षा मंत्री? ओ बाजल, मंत्री बन' लेल पढ़ब जरूरी थोड़बे छै।

राम. : मंगतूक ई प्रश्न हमरा छुबि गेल। बड़का-बड़का लोक सभक धिया-पुता के पढ़ब नीक नयि लागे छै.. माय-बाप ओकर पढ़ाईक पाछा पागल बनल रहैत अछि आ धिया-पुता सभ हुनकर मंह पर पों-पों पदैत रहैत छथि.. आ ई एकटा लोथ.. भिखमंगा.. हम तय केलहुँ जे एकरा ओतेक त' पढ़ाइए देबै जे ई पेपर - तेपर पढ़ि सकय.. ई अ, ज आकारा जा.. ह ऊकार हि.. आ आखर-आखर करैत ओ पढ़ब सीखि गेलै। आ आब त' ओ जतेक तेजी स' पढ़ैत अछि कि ओतेक तेजी से पढुओ सभ नञि पढ़ि सकत।

किसुन : हिन्दी छै ने! तैं जीभ के लकबा मारि जाइ छै.. एना-एना मुंह बनाओत कि लागत जे कोनो लाटक नाती आबि गेल अछि बिलायत से।

राम : कंपूटरो स' तेज ओकर दिमाग छै.. सभ किछु जेना जीहे पर राखल रहैत छै.. जेना कंपूटरक, की कहै छै... ऊ, मेमोरी में..

किसुन : अरे रामआसरे भाइ, ई मोरी तो सुने थे.. नाली। ई मेमोरी की छै? मोरीक बहीन की?

राम : ननदि छै। रौ मेमोरी नञि बूझै छें.. कंपूटरक दिमाग। मुदा मंगतूआक दिमाग त' कंपूटरोक दिमाग स' बेसी तेज छै। एकदम फास्ट.. रौ, कंपूटर मे त' देख' लेल ओकरा पहिने फोलू, फ़ेर फाइल त' की दनि, कहाँ दनि फोलू..

तहनो सेभ माने दिमाग बचा क' राखने छी त' भेटत, नञि त'.. हवा.. लें सार.. गेल सभ.. आ जदि कोनो बेरामी घुसि गेल, तहन त' पूरे गुड़डी बकट्टा..

किसुन : अरे, ठीक इएह गप्प हमर साहेब कहै छथि। आ सएह सच्छात विराजमान छै मंगतुआक खोपड़ी में। ऊँहूँ, गलति बाजि गेलहुँ, ओकर मेमोरी त' ई कंपूटरोक मेमोरी स' फास्ट चलै छै। चालू कि बन्द करबाक झंझटि स' फ्री। कोनो घटनाक दिन, समय, साल, कारण पूछू, तत्काल हाजिर। पोलटिस पर पूछू कि सनीमा पर कि टीवी पर की मौगी सभक नवरंगा डरेस पर की ठोर पालिस पर। सभ कंठस्थ, हनुमान चलीसा जकाँ। भूत-पिचास निकट नहिं आबै..

राम : अरे, शुरू-शुरू मे लोक आओर बड़ड हैरान होइत छलै ओकरा अखबार पढ़ैत देखि क'। किओ-किओ त' मुंहो बिचकबैत छल जे एह, भेल भिखमंगा आ शान प्रधानमंत्री के।

किसुन : ओकरा आओर के बुझले नञि छै ने जे मंत्री सभ अखबार नञि पढ़ै छथि.. पढ़ताह कोना.. फुर्सतिये कत' छै.. जन-सेवा स' (जनसेवा पर स्वर मे व्यंगात्मक जो।)

(तखने पार्श्र्व स' तेज गति स' चलबाक ध्वनि अबैत छै। दुनू पुन: अटेंशनक मुद्रा मे आबि जाइत छथि। सीएमडी निकलैत छथि। दुनू खूब नमगर सलाम हुनका ठोकैत छथि। हुनका जाइते देर कि सभ किओ फक स' साँस छोड़ैत छथि आ फेर सभ-किछु ढील-ढाल भ' जाइत छै। रामआसरे आ किसुनदेव अपन वर्दीक कलफ ढीला करैत छथि, मोछो नीचा करै छथि।)

राम : देखलही। साहेब के जाइते सावधानक कलफ मे लागल ई पूराक पूरा.. की कहै छै .. मैनेजमेंट ग्रुप.. सभ

एकदम स' ढील-ढाल भ' क' लटकि गेलौ। एना (हाथ-गोर मूड़ी ढीला क' क' देखबैत अछि।)

किसुन : चल आब मंगतुआ लग। द' आबी अखबार। (दुनू मंगतू लग पहुँचैत छथि। ओकरा अखबार देइत छै। मंगतूक चेहरा पर दुख, अपमान, नाराजगीक भाव छै। ओ अखबार लेब' लेल उत्सुक नञि देखाई पड़ैत अछि।)

किसुन : रौ लाट साहेबक नाती। मंगबे भीख आ शान रखबें राजा-महाराजा के। (कनेक नरम भ' क') रौ, हम सभ त' अदना मोलाजिम छी। हुकुम नञि बजाएब त' नोकरी स' छुट्टी। देखलही ने आइ तों जे बड़का-बड़का हाकिम सभ सेहो कोना कुकुरक नांगरि जकाँ .. ले, राखि लें, काल्हि स' जल्दी आनि देबौ।

(मंगतू ओकरा आओर दिस बेगर देखि क' अखबार ल' लैत अछि।)

किसुन : की जानि एहेन कोन हीरा-मोती जड़ल रहै छै अई मे जाहि लेल ई एतेक पिरीसान फिरैत अछि। वएह त' खबरि होइत छै - हत्या, अपहरण, बलात्कार। लागै छै जे पूरा देस अई सभ' मे हाथ रोपि क' बइस गेल अछि।

मंगतू : (अखबार मे डूबि गेल अछि।) ओहि दिन हम अखबार मे गिनती कएल.. 380 लोकक मरबाक समाचार। किओ अपन मौगत नञि मरलै.. किओ गोली स' त' किओ बस पलटी स, किओ बम स', किओ अपनही बेटा-पुतौहु द्वारा.. एखने त' खबरि छलै - बम फुटबाक। खूब असमान चढ़ि रहल छै मौगतक ई धंधा। एखने त' लोक आओर निकलल छलाह, घर स', बजार स', काज स', हंसैत-खेलैत, सौंसे देहे आ एखने हाथ-गोर साफ.. भरि जिनगी लेल लोथ.. तहन एक दिन की ई पूरा दुनिये लोथ भ'

जेतै? (ठेहुन मे मुंह नुका लइत अछि, दर्शक मे स' एक गोट बाजैत अछि। मंगतू चेहाक मूड़ी ऊपर उठबैत अछि।)

दर्शक 1 : साँच कहल रौ भाई, साँच! ई देख (केहुनी धरि कटल हाथ देखबैत अछि) रौ, बम, दंगा, झगड़ा-फसाद - मरैये के? कोनो नेता? हुनकर बेटा-जमाय, नाती-पोता? ऊँहूँ - धूरि सन हम, तों, ई, ओ..। ओ सभ पैघ.. मातबर लोग.. पैघ लोक, पैघ गिनती.. पैघ गिनती मे छोट-छीन संख्याक मोजर नञि .. ।

दर्शक 2 : (महिला अछि) देखू हमर ई मुंह (झरकल मुंह) जहिया स' एना भेलए, ऐना देखब छोड़ि देलहुंए.. सुनैत छलहुं जे लोक प्रेम मे त्याग करैत छथि। आई प्रेमो जबर्दस्तीक चीज बनि गेलैय'! हमरा अहाँ स' प्रेम भ' गेलए तैं अहाँ के हमरा स' प्रेम करैये पड़त.. दोसर रस्ताक कोनो गुंजाइसे नञि.. वरना तैयार रहू.. परिणाम लेल.. आह.. हम शिकार भ' गेलहुँ एहेन प्रेमक। (चिकरैत) रौ, बिगाड़' त' आबै छौ, बनाब' आबै छौ? कोन हक्के तों एना केलें हमरा संगे.. (कनैत) आब ऊपरबला स' मौगत माँगै छी त' सेहो नञि भेटैय'.. दिन-राति ओढ़नी स' मुंह तोपैत चलैत रहू, अपना स' बेसी दोसर लोकक खेयाल करू जे हुनका हमर ई मुंह नञि देखाइ पड़य.. (ओत्तहि ठेहुन भरे बैसि जाइत अछि।)

मंगतू : कहबी छै जे सात जनमक बाद मनुक्ख जनम भेटै छै। आ सएह मनुक्खक ई अवस्था? (विक्षिप्त जकाँ चिकरैत अछि) रौ, रौ सर्वशक्तिमान कहाब'बला भगमान! कत' छें तों? मनुक्ख बनेबाक बदले राक्षस कियैक बना रहल छें? एतेक फुटानी कियैक रौ? आ सोझा मे, देखियौ तोहर हिम्मति.. रौ, बौक-बहीर छें की.. देखबही ई धरती के, किछु करबहीं एकरा लेल कि कान मे तेल ध' क' सुतल

रहबें?.. रौ, किछु क' सकै छें त' कर.. नयिं त' हमरो मारि दे आ तोंहो कतहु डूबि-धँसि जों.. नञि जीबाक अछि.. मौगत.. द' दे.. भगवान, मौगत.. नञि जीब' चाहै छी राक्षस स' भरल अई दुनिया मे.. (भोकासी पारि क' कनैत अछि।)

(जाहि समय मे मंगतूक प्रलाप चलैत अछि, ओहि समय ओम्हर स' पास होब बला लोक आओर ओकरा दिस देखैत चलि जाइत रहैत अछि। ककरो नजरि मे ओकरा लेल कोनो सहानुभूति नञि । ध्वनि सभ ऊभरैत अछि.. 'की भेलै रौ एकरा?', 'अरे, किछु नञि, पागल छै सार!','चोट्टा, भगवान के गरियबैत छै, पछिलो जनम मे गरियैने हेतै, तैं' अई जनम से सेहो..', 'रौ, बइसल बनिया की करय, ई कोठीक धान ऊ कोठी करय', 'काज ने धंधा, मौज-मस्ती ठंढा.. ', 'हमरा आओर जकाँ ट्रेन बस ट्रेन करितियइ, नौ स' पाँच मे जिनगी स्वाहा कर' पड़तियैत त' बुझितियइ.. गै चल, तोंहो कोन पगलेटक चक्कर मे फँसि गेलैं.. ', 'नञि रौ ई पगलेट नञि छै.. वाजिब गप्प कहै छै.. भीख माँगब एकरा नीक नञि लागै छै.. मुदा.. मजबूरी छै.. के काज देतै एकरा..' आदि - आदि । ..सभ पात्र एम्हर ओम्हर स' निकलि क' मंगतूक पाछा ठाढ़ भ' जाइत अछि आ समवेत स्वर मे कहैत अछि..)

'हम सभ.. मात्र पुतली भरि
नियंताक अपन-अपन
इच्छाक / कामनाक दीप लेसने हम
सख्त अछि ताकीद
देखू मात्र, बजाऊ कोर्निश
गबैत रहू राग-दरबारी..

हे प्रभो, अन्नदाता
बस कृपा करी एतबे जे
बनल रही हम सभ
पुतरी भरि..
डोरी अदृश्यक हाथ मे।

(प्रकाश मंगतू पर केन्द्रित होबैत शनैः शनैः फेड आउट)

दृश्य : 2

(मंगतूक स्थान - भोरक बेला - मोटर गाड़ी स' एक गोट सेठ उतरैत अछि - गाड़ीक दरवाजा फोलब, बंद करबाक, जेब स' टाका निकालबाक अभिनय.. टाका निकालिक' ओ मंगतू दिस-बढ़ैत अछि..)

आदमी : उठ, उठ, ऐ भाई.. भोर भ' गेलै।

(मंगतू ओकरा दिस प्रश्नाकुल नजरि स' देखैत अछि। बाजैत किछु नञि अछि..)

ई ले - एकावन टाका। राखि ले।

मंगतू : एकावन टाका? मुदा कियैक?

आदमी : आई हमर बाउजीक बरखी अछि। ब्राह्मण अथवा दरिद्रनारायण भोजन करेबाक फुर्सति अछि नञि तैं, आई पाँच लोक के दान क' देइत छियै।

मंगतू : साब, हमर एक गोट विनती अछि.. साब, ई पाई अहाँ राखि लिय'.. आ एकरा बदला मे हमरा कोनो काज द' दिय.. पतियाउ साहब जी, हम काज क' सकै छी.. ई हमर हाथ देखियौ.. गोर देखू.. (विचित्र तरीका स' हाथ-गोर चलबैत अछि) साहेब जी.. हमरा अई नरक स' निकालू साहेब जी.. हमरा काज दिय'.. केहनो.. पैघ-छोट.. अहाँ के शिकायतक मोका नञि देब साहेब जी। (ओकर पएर-पकड़बाक अभिनय करैत अछि। आदमी घबड़ाक' पराएत अछि। गाड़ी मे बैसबाक, स्टार्ट करबाक अभिनयक संग खौंझाएल स्वर में..)

आदमी : हुंह! काज चाही । देह न दशा, मुर्गी प्यारे फँसा। नीक-नीक लोक के त' काज भेटै नञि छै.. सभ ठाॅ त' भर्ती पर रोक लागल छै.. चुनावक समय मे अखबार मे

नौकरीक विज्ञापन भरि.. तकरा बाद फुस्स! सरकारक आमदनिए छै। ई विज्ञापन स'.. डीडी, पे-ऑर्डर.. एकरा देखियौ.. काज क' लेब.. कोनो काज.. जहन कोनो काज कइए लेबें त' माँग भीख! ईहो त' काजे छै आ बड़ड मेहनति आ हिम्मति बला काज छै।

(गाड़ी चलेबाक अभिनय संगे मंच स' बाहर। बाहर जाइत काले मंगतू पर नजरि..)

मंगतू : चलि गेलाह। सब चलि जाइत अछि। भीखक एक गोट अठन्नी, रूपैया फेंकि क'.. बस! साधे रहि गेल जे किओ हमरो सहारा दितियैक - अपना पैर पर ठाढ़ हेबा मे.. लोक आओर पतियाइ कियै नञि छथि जे हम ठाढ़ भ' सकै छी.. लिख-पढ़ि सकै छी.. ई देखू (हाथ स' जमीन पर किछु लिखबाक प्रयास करैत अछि) .. आ.. आ.. ई किसुनदेव आ रामआसरे भाई त' कहैत छथि जे हमर दिमागो बड़ड तेज अछि (कनेक मुस्काइत अछि।) तैं त' हुनकर बड़का साहेब हमरा लग आएल छलाह.. बाप रौ, की सूट-बूट, की शान.. (मंगतू पर स' फेड आउट)

(फ्लैश बैक आरंभ)

(एक अधेड़, रोबदाब बला व्यक्ति.. नाम तांबे.. मंच पर बेचैनी स' एम्हर-ओम्हर बूलि रहल छथि। रामआसरेक प्रवेश)

राम. : साहेब जी?

तांबे : (अनसोहांत स्वर मे) yes?

राम. : साहेब जी किछु पिरीशानी मे बूझा रहल छथि।

तांबे : परेसान नञि होइ त' की राग मल्हार गाबी? सभटा डाटा कलेक्ट कएल छल। पता नञि कोना हार्ड डिस्क सेहे उड़ि गेल।

राम. : साहेब जी, कम्पलेन नञि लिखाओल की?

तांबे : एंट्री त' क' देलहुँ। मगर तकरा स' की? इंजीनियर त' काल्हिए आओत। आ मैटर हरि हालति मे आइए देबाक अछि। तैं त' लेट बइसल छी.. मुदा.. (माथ पकड़ि लेइत अछि।)

राम. : साहेब जी.. छोट मुंह पैघ गप्प.. अनसोहांत सन सेहो.. मुदा नीचाँ.. छै ने.. ओ लोथ.. मंगतू.. भ' सकैय' ओ बता दियए..

तांबे : (एक नजरि ओकरा देखि ठठा क' पेट पकड़ि क' ठठाएत अछि।) ऊ लोथ भिखमंगा, ऊ हमरा डाटा बताओत? रौ, तोहर दिमाग दुरूस्त त' छौ ने! जे डाटा कलेक्ट कर' मे हमरा एतेक समय लागल, एतेक - एतेक किताब कंसल्ट कर' पड़ल, ओ ओहि अनपढ़, लोथ, भिखमंगा..

राम. : साहेब जी, कम्पूटर त' अहाँ के अहिना.. इंजीनियर काल्हिए आओत। काज करबाक अछिए अहाँ के। आर कोनो उपाय त' अछि नञि! त' एक बेर टराइ करबा मे हर्जे की! हमरा ओना विश्वास अछि जे ओ अहाँक अबस्से बता देत।

तांबे : कोन आधार पर तों कहि रहल छें एना?

राम. : ओ पढ़' जानै छै। हमहीं आ किसुनदेव मिलिक' ओकरा अच्छर ज्ञान करैलियै। ओकर लगन आ मेहनति.. आई ओ अखबारक नाम स' ल'क' अंतिम पन्ना आ संपादकीय धरि पढ़ि जाइत अछि। सभकिछु सिलेट पर लिखल लाइन जकाँ मोन रहैत छै ओकरा। तैं हम.. बाकी त' अहाँक इच्छा..।

(फ्लैशबैक समाप्त। प्रकाश मंगतू पर।)

मंगतू : रामआसरे कहला सन्ते तांबे साहेब आएल छलाह! (हंसैत) बार रौ बाप! की गुमान मे फूलल छलाह। हमरा ल'ग ठाढ़ हेबाक विवशता, मुंह पर बहुत किछु जनबाक दर्प,

जेना दुनियाक संपूर्ण ज्ञानक गठरी हुनके लग हुअए, हमरा लेल हुनक ऑखि मे लहराइत घिरनाक समुंदरि, संगही एकटा उपकारक भाव सेहो, जे देख - हमही छी, जे ऐलौं तोरा लग.. ले बिलइया के, हौ जी, ऐलौं त' कोनो हमरा लेल.. एलौं अहाँ अपना लेल.. ऐलौं, पूछलौं, हमरा मोन छल, बतेलौं, अहाँ लिखलौं, छपेलौं, आ बिसरि गेलौं। एकटा धन्यवादो धरि नञि। रामआसरे भाइ लेख देखाओल.. मुदा पढ़ि नञि सकलहुँ - अंग्रेजी सन्ता। हमर ज्ञानक उपयोग कोना भेलै.. ई हमरे नञि पता.. इएह त' अछि हमर तकदीर.. (विचित्र हँसी हँसैत अछि.. पत्रकार-युवक-युवतीक प्रवेश। ओकरा हँसैत देखि थम्हि जाइत छथि।)

युवती : मुगतू? (मंगतूक हंसी थम्हि जाइत अछि।) की भेलौ? बड़ड हंसि रहल छे।

मंगतू : (कनेक सकुचाइत) जी.. ओ किछु नञि.. बस.. तांबे साहेब बला बात..

युवक : (रूक्ष स्वर मे) सुनल जे ओ तोरा लग आएल छलाह आ तों एकदम टेपरेकॉर्डर जकाँ चालू भ' गेल छलें?

मंगतू : (ओकर रूक्षपन के लक्षित नञि करैत अपनही प्रवाह मे) त' की करितियैक! एतेक बड़का साहेब! एतेक पिरीसान.. चांसे बूझल जाओ जे हमरा पता छल। - जे किछु पता छल, से सभ बता देलियइ.. देखलियइ हम लेख.. मुदा अंग्रेजी.. साब, अहाँ हमरा अंग्रेजी पढ़ब सिखा देब?

युवती : (मोन पारैत) हे सुनु, हम सभ एकरा पर स्टोरी केने छलहुँ ने?

युवक : अरे, ऊ त' पुरान कथा भ' गेलै। वंडरफुल एंड पावरफुल प्रोजेक्ट ।

युवती : एकरा किछु लाभ करेलहू की नञि?

युवक : माने? (ऑफिस दिस बढ़ैत अछि।)

युवती : (अनुसरण करैत) माने ई, जे ओहि समय गप्प भेल छल जे पेमेंट भेलाक बाद अहाँ ओकरा किछु देबै.. जस्ट फॉर ए नाइस जेस्चर.. मुदा, अहाँ त' हमरो किछु नञि बताओल।

युवक : अहूँ त'! ओ की केलकई जे ओकरा पेमेंट करियई?

युवती : वएह त' धुरी छल। नञि बतेतियैक त' अहाँ काज क' सकै छलहुँ? नञि न! आब किछु ओहि गरीब के.. (दुनू ऑफिसक गेट धरि पहुँचइत छथि। रामआसरे आ किसुनदेव दुनूक गप्प सुनै छथि।) काज निकलि गेल त' बस, मुंह फेरि लेलहुँ!

युवक : जमाने इएह छै डार्लिंग। देखलहुँ मि. तांबे के.. सभटा काज करबा लेलन्हि मुदा नामोक क्रेडिट नञि..

युवती : अहूँ सएह बन' चाहै छी त' बनू.. मुदा हमर मानधन हमरा दिय'! हम ओही मे स' ओकरा..

राम. : नमस्कार साहेब।

युवक : नमस्कार नमस्कार।

किसुन: कोनो गंभीर गप्प सर?

युवक: उंहूं, किच्च्छु नयिं।

युवती : किछु कियैक नञि? अरे, हम दुनू ओहि मंगतू पर काज करै छलहुँ। तहन ई गप्प भेल छल जे पाइ भेटला पर हम किछु ओकरो देबै। मुदा.. ई त' हमरो पाइ घोखि गेलैन्हि..

युवक : (जेना भेद खुलि गेल हुअए) ओके बाबा ओके। अहांक पाइ अहां के द' देब। ओकरो द' देबै.. आब त' खुश? (फसफुसाइत) सभके सभ किछु कहब जरूरी छै की? (बाजैत भीतर चलि जाइत छथि। युवती पहिने जाइत

अछि। पाछा स' युवक अपन तर्जनी माथ पर ल' जाक घुमबैत अछि -- माने युवती कनेक क्रैक अछि।)

राम. : देखल भइया ई बड़का-बड़का लोकक खेल! पत्रकार छथि ई सभ। जनताक पैरोकार। जनताक रच्छक। रच्छक खुदे भच्छक.. हाँक' लेल कहू त' एकदम सूरूजे पर, देब' बेर मे पद-पद पाद' लगताह! हजारो टाका झिंटने हेतै मंगतुआक नाम पर। आ ओकरे किछु देबाक नाम पर ..

किसुन : सटक सीताराम! सभ एक्के थरियाक भांटा रो भाइ!

राम. : ऊ तांबे साहेब! ओकरे मदति स' ओ लेख लिखलन्हि। छपबो केलै। आब हमरा त' अंग्रेजी, फंगरेजी अबै नञि अछि। हम पूछ' गेलियै जे साहेब, अई मे मंगतूक कोनो जिकिर-उकिर..!

किसुन : की बाजलन्हि?

राम. : अरे, ओ तेहेन न आँखि गुरेरलन्हि जे एह -'ई लेख है रामआसरे, इन्टरव्यू नहीं कि सबका नाम देते रहें।' हम त' तइयो ढीठ बनल बजलहुँ जे साहेब, ओकर कोनो भला भ' जयतियन्हि। भिखमंगाक जिनगी स' ओकरा छुटकारा भेटि जइतियैक। ओ फेर आँखि तरेरलन्हि। हम फेरो थेथर जकाँ बाजलियैक जे ठीक छै, नाम नञि देलियै त' किछु दामे द' दियऊ। लगतै ओकरो जे हँ, आई अपना दिमागक कमाई भेटलए.. सभ सार चोर अछि- ऊ तांबे, ई छौंड़ा.. काम रहला पर बाबू-भैया आ निकलि गेला पर दू-दू लात।

(पाश्र्व स' सोगबला धुन। प्रकाश मंगतू पर। ओ चिकरैत अछि)

मंगतू : किओ हमरा अई नरक स' निकालि क' ल जाऊ। रौ तकदीरक नाति, कत' मुंह मरा रहल छें। देह नञि त' तोहें नीक जकां रहितें हमरा लग। कोनो नीक, पाईबला

घर मे देतें। माय-बाप लग। मुदा, जहन अपने माय-बाप अपन नञि भेल तहन..

(सोगबला धुन उत्सव धुन मे बदलि जाइत अछि। मंगतूक चेहरा फेड आउट होइत अछि। एक काल्पनिक लोकक आभास देइत लाल-नारंगी-पीयर रोशनी पसरइत अछि आ ओहि प्रकाश मे देखाइ पड़ैत अछि - एक गोट स्त्री, जकरा कोरा मे एकटा नवजात अछि। अन्य स्त्रीगण नाचि-गाबि रहल छथि!)

रूपैया मांगे ननदी लाल के बधाई

एके रूपैया मोरा ससुर के कमाई

अठन्नी ले लो ननदी लाल के बधाई

एके अठन्नी मोरा पिया के कमाई

ओ ना मैं दूँ ननदी लाल के बधाई

एक स्त्री : देखू भौजी। चान जइसन बेटा देलन्हि अछि हमर भैया अहाँ के। आब बेगर छत्तीस भरक डँड़कस के नञि मानब।

(सभ हंसैत छथि। स्त्री लजाइत अछि। पुरूषक प्रवेश। हँसैत-नचैत स्त्रीगण विदा भ' जाइत छथि।)

पुरूष : राधा, की नाम राखब एकर?

स्त्री : (लजाइत) जे अहाँ कही।

पुरूष : हमर मानी त' एकर नाम राखब चिरंजीवी। खूब पढ़ाएब, लिखाएब, कलक्टर बनाएब।

स्त्री : हमरा मानी त' ओकरा पर अपन मर्जी नञि थोपी । अपना मर्जी स' ओ जे बनय, डाक्टर कलक्टर, एक्टर..

पुरूष : अच्छा भई, हम त' हुकुमक गुलाम छी। हुकुमक बेगम जे हुकुम देतीह, हुकुमक गुलाम बजा आनत (कोर्निश करैत अछि। स्त्री हंसैत अछि। पुरूष छेड़ैत अछि) गीत मे

कहलियै - पिया के कमाई नञि देबै ननदि के, हमर बहीन के। ओ जीवित नञि छोड़ती अहाँ के! तहन? तहन हमर की हएत (आवाज रोमांटिक होइत अछि। स्त्रीक हंसी। अंधकार-प्रकाश मंगतू पर।)

मंगतू : एहेन माय-बाप हमर करम मे कत'? समाजक सामना करबाक हिम्मत नञि भेलै। अई समाज मे श्राप भोग' लेल छोड़ि देलैन्हि। सोचल, जे अपने स' अपन तकदीरक किताब लिखब, मुदा ऊ बकट्टा गुड़डी हमरे जिन्दगी के बकट्टा क' गेल.. लोथ, लूल-लांगड. बनल ई जिनगी । मौगत की एकरा स' अधलाह हेतै?.. मुदा मौगतो त' नञि अबैत अछि। नञि घरक आसरा, नञि समाजक, नञि लोकक। कथी लेल जीब, ककरा लेल जीब, ई जीबाक कोनो अर्थ?

(मंगतू भोकासी पारि कान' लागैत अछि। रामआसरे आ किसुनदेव ओकरा लग अबैत छथि।)

राम. : अपन इ ऑफिसे मे त' कतेक विकलांग लोक काज करै छथि, भोइकर साहेब, लीना मैडम, सिन्हा जी.. मुदा .. एक दिस एहेन माय-बाप आ दोसर दिस ई समाज.. सभक फाटल मे आंगुर कर' बला। रौ, तोरा कोन मतलब छौ किओ किछु करए। ककरो चैन स' जीब' नञि देतै ई समाज..

(रामआसरे आ किसुनदेव मंगतू के धैरज बंधबैत छथि। पार्श्र्व स' कविता)

'जिनगी जुआ अछि
सट्टा अछि, बजार अछि
ताश अछि, पत्ता अछि
रोशनीक बाढ़ि

चोन्हियाएल लोक
भीड़ अछि, एकान्त अछि
भोरक तारा विश्रान्त अछि
तारा टूटए नञि
आस छूटए नञि

(फेड आउट)

दृश्य : 3

सांझुक समय। तेज बरिसाति आ मेघ बिजली गर्जन-तर्जनक स्वर। पहिलुका तीनू भिखमंगा' छौंड़ा मे स' सभस' छोटका आब रूमाल बेचैत अछि। ओ अपन समान सभ प्लास्टिक स' तोपबाक चेष्टा करैत बस स्टैंड दिस अबैत अछि। मंगतू अपना जगह बइसल पानि बरिसब देखि रहल अछि। ओकरा लग भीखक पाइ छितराएल छै। छौंड़ा दूरे स' मंगतू के देखैत अछि आ फेर अपना पेन्टक जेबी उन्टा क' देइत अछि। मंगतू लग पड़ल पाई दिस ओ चुंबक जकाँ आकर्षित होबैत बढ़ल चलैत अबैत अछि। मंगतू पानि छोड़ि ओकरा दिस देख' लगैत अछि। छौंड़ा दू-चार डेगक दूरी पर एकाएक थम्हि जाइत अछि।

मंगतू : की रौ झुनमा, की भेलौ।

झुनमा : किछु नञि ।

मंगतू : त' रूकि कियैक गेलें?

झुनमा : अहिना।

मुंगतू : मुंह एना छाउर जकाँ कियैक केने छें? माल-ताल नञि बिकलऊ की?

झुनमा : ई बरखा-बैकाल मे लोक घर भागत की समान कीनत।

मंगतू : (कनेक काल चुप रहिक' जेना बात बदलिक) ई त' तों नीक केलें, जे भीख मांगब छोड़ि काज पकड़ि लेलें। अच्छा झुनमा, ई बता, तोरा पानि नीक लागै छौ?

झुनमा : पेट भरल रहला पर गदहियो करीना कपूर लगै छै।

मंगतू : (जेना अपनही प्रवाह मे) हमरा बड्ड नीक लगैत अछि ई बरिसाति! आ, सुनबै छियौ, किताब आओर मे केहेन-केहेन गप्प सभ लिखल छै, बरिसाति लेल - कारी-कारी मेघ, झमझम बरिसति पानिक धार - चांनी जकाँ, भीजल

धरतीक सोंन्हिपन, जेना कुम्हारक आबा मे बासन आओर पाकि रहल हुअए। हवा मे सिहकी आ मोन मे कामनाक ज्वार! प्रिय स' मिलनक इच्छा..।

(पार्श्र्व स' कजरीक मद्धम स्वर)

सखी हे आएल रात अंधियारी

बदरा कारी-कारी ना

झींगुर, मोर, पपीहा बोले

दादुर दमके ना, सखि हे

दादुर दमके ना, सखि हे

आएल रात अंधियारी

बदरा कारी-कारी ना।

झुनमा : रह' दे रौ, रह' दे। पोथीक गप्प रह' दे। पोथी लिख' बला पढ़ुआ लोक छै। ओकरा सभ के भरिसकि नञि बूझल छै जे पानि एला स' बाढ़ि अबै छै, घर, जान-माल डूबि जाइ छै, सभटा जमा पूँजी स्वाहा..

मंगतू : (फेर अपनही रौ मे) आ ओकरो स' त' नीक लागै छै बरिसातिक बादक रौद। एकदम नहाएल धोएल, स्वच्छ काया जकाँ।

झुनमा : (खौंझा क') रौ सार! एतेक साहरूख खान कियै बनल जाए छें रे। एहेन बरखा-बैकाल मे तोरा सनीमा सूझै छौ, हमरा राहत बाँट'बला देखाई पड़ैत अछि। हे.. ऊ देख.. हवाई जहाज स' पाकिट सभ खसि रहल छौ, हे एम्हर.. हे ओम्हर.. हौ, हौ जी, एकटा एम्हरो खसाबहक ने! यौ भाई जी, भाई जी यौ, एकटा एम्हरो खसबियौ ने यौ। बड़ड भूख लागलए.. एको छदामक माल नञि बिकाएल..।

मंगतू : रौ झुनमा। ओम्हर की चिकरि रहल छें। ले, ई पाइ ल' ले, आ ल' आन किछु.. गप-सप्प करैत खा-पी लेब। आ हे, सूत'क मोन करओ त' सुतियो जइहें। अही ठाँ स' धंधा पर निकलि जैहें।

(झुनमा पाइ लेइत अछि आ चलि जाइत अछि। मंगतू फेर स' अपन दुनिया मे भुतिया जाइत अछि। ओ गबैत अछि..)

'बरसात में हमसे मिले तुम सजन

तुमसे मिले हम, बरसात मे।'

(झुनमा अबैत छै आ एकटा ठोंगा ओकरा थमा देइत छै।

झुनमा : ले रौ हमर आमिर खान! खो।

(दुनू खाइत अछि। मंगतू स्वाभाविक रूप स' आ झुनमा हबड़-हबड़ खाइत अछि।)

मंगतू : चौप खूब नीक बनल छै ने।

झुनमा : हूँ..

मंगतू : काल्हि कोनो आओर चीज आनिहें।

झुनमा : हूं..

मंगतू : किछु बाजै कियै ने छें?

(झुनमा हाथ स' थम्ह' के इशारा करैत अछि। मंगतू ओकरा देखैत रहैत अछि। झुनमा पूरा खेलाक बाद ढेकरैत अछि आ बजैत अछि।)

झुनमा : हँ, आब बाज! पेट खाली रहला पर दुनिया बड़का अंडा देखाई छै। आब पेट भरि गेल अछि आ भरल पेट मे त' सुअरनिओ रबीना टंडन लागै छै। (गबैत अछि) तू चीज बड़ी है मस्त-मस्त।

(खाए पीबि क' दुनू ठोंगा ओही ठाँ एक कोना मे बीगि देइत अछि। दुनू पानि पिबै अछि आ ढेकरैत अछि। दुनू एक-दोसरा के देखैत ठठाक' हँसि' पड़ैत अछि।)

झुनमा : कतेक बाजल हेतै?

मंगतू : दस स' कम की भेल हेतै! पानि त' कहैय' जे आइ छोड़ि काल्हि हम बरसबे नञि करब।

झुनमा : (उदास होइा) एतेक पानि बरसतै त' रोड सभ टूटि जेतै। पटरी डूबि जेतै। बस ट्रेन चलल बन्न भ' जेतै।

मंगतू : त' अई लेल तों मलिन कियैक भ' गेलें?

झुनमा : रौ, बस-ट्रेन नञि चलतै त' पसिन्जर नञि ऐतै। ओ सभ नञि एतै त' हमर बिक्री-बट्टा.. बिक्री नञि त' पाइ नञि.. पाइ नञि त' दाना नञि।

मंगतू : रौ झुनमा, एक बात बता। तों बस-ट्रेन स' कतेक दूर धरि गेल छें? पटना स' मुजफ्फरपुर धरि.. किऊल धरि.. दानापुर.. पटना साहिब.. केहेन सोहनगर लागैत हेतौक ने देख' मे.. हजारो लोकक एके संग चढ़ब, एके संगे उतरब। फर्र-फर्र भागैत बस- ट्रेन। सर्र-स' छूटैत लोक, घर, खेत, खलिहान, गोरू बरद.. । हमरो हाथ-गोर रहतियैक त' जएतहुँ ने तोरे आओर जकाँ।

झुनमा : हँ, जेतें आ पुलिसक डंडा आ पब्लिक गारि-बात खेतें। बम फुटनें जान गमबितें। एम्हर बम ओम्हर बम, एतेक मरलै, एतेक घायल.. याहि सभ त' आइ काल्हिक नूज छै।

मंगतू : (दीर्घ साँस लेइत) जानक की। ऊ त' अई ठाँ बइसलो बइसलो जा सकै छै। के जानए, एगो बम एम्हरो फाटय आ हम सभ' लत्ता बनि उड़ि जाइ.. बम, गोली, दंगा- ई सभ त' आइ काल्हिक रीत भ' गेलैये। एगो बम फूटै छै आ सैकड़ो लोक एक्के मिनट मे अपाहिज, लोथ भ' जाइ छै। किओ पूछय हमरा स' लोथ भेलाक दर्द। रौ.. हम त' रोजे मनबै छी जे हमरा मौगत आबि जाए। ई लोथ जिनगी स' की फेदा!

झुनमा : हमहूँ सभ त' इएह बाजै छी।.. की सोचै छें? ऊपरवाला लग एतेक टेम छै हमरा आओरक गप्प-सुनबाक। नमगर लाइन हेतै रौ भाइ! (ओकासी मारैत अछि।)

मंगतू : नींद आबि रहल छौ। सूति रह अही ठाँ।

(दुनू मिलिक' मंगतूक चीकट कथरी ओछा ओठँगि जाइत अछि। कनेक देरी मे दुनू फ़ोंफ़ि काट' लगैत अछि। मंचक प्रकाश शनैः-शनैः लाल होब' लगैत अछि। नीने में मंगतू बड़-बड़ाइत अछि-'हम जीय' नञि चाहै छी, 'हमरा मौगत द' दिय!' 'हमरा मौगत कियैक नञि अबैत अछि।' झुनमोक अस्फुट स्वर बहिराइ छै -'हं', जिय' नञि चाहै छी।' 'ई केहेन जिनगी अछि! मरने बेसी नीक' आदि। प्रकाशक लाली मंगतू पर केन्द्रित। मंगतू नींने मे उठि क' बैसि जाइत अछि आ अलसाएल नजरि स' अपना के देखैत अछि। जेना-जेना ओ अपना के देखैत अछि, तेना-तेना ओकर आँखि स' नींद गायब भेल जाइत अछि आ ओहि स्थान पर आश्चर्य भर' लागैत छै।)

मंगतू : अरे, ई की? हमर हाथ? आ पैर सेहो?.. जेना जमीन स' बीया फूटि रहल अछि - सुंदर, कोमल, नरम.. ई केहेन चमत्कार! भगवान, अहाँ सचमुच कृपालु छी..

(शनैः शनैः मंगतू मंच पर पूर्ण व्यक्तिक रूप मे ठाढ़ भ' जाइत अछि।)

हम.. हम एक गोट पूरा-पूरा आदमी, दुनू हाथ, दुनू गोर.. पतियाऊ की नञि पतियाऊ। (अपने बांहि मे बिठुआ कटैत) नञि, पतियाएबला गप्प नञि छै। (फ़ेर अपने स') कियैक नञि छै? हमर हाथ गोर घुरि आएलए हमरा लग, त' अइ मे नञि पतियाएबला गप्प की भेलै? आब हम अपन हैसियत बदलि सकै छी.. नीक समांग़ बनि सकै छी। भीख माँगब .... ई गर्हित कर्म स' हमरा मुक्ति भेंटि जाएत.. भेटत की.. भेटि गेल! हे.. ई लिय'.. छोड़लहुँ

हम भीख माँगब.. (हँसैत अछि।) आई स', एखनि स'। आब हमरा अई जिनगी स' कोनो सिकाइत नञि ।

(किलकि उठैत अछि। झुनमा ओकर आवाज सुनि उठैत अछि। मंगतू के अई रूप मे पाबि क' हैरान रहि जाइत अछि। मंगतू कनखी मारि क' खुशी प्रकट करैत अछि।)

झुनमा : ई जादू छै।

मंगतू : ऊँहूँ! सच।

झुनमा : भइए नञि सकै छै। ई जरूर कोनो जादू छै अथवा नैना -जोगिन।

मंगतू : अहँ! एकदम सच। छूबि के देख।

(झुनमा ओकरा छुबै छै। अपन आँखि मलैत छै, फेर छुबै छै।)

झुनमा : हँ, बुझा त' रहलए सचे सन! जौं ई सच छै, त' गुरू, कहू, आब की इरादा?

मंगतू : इरादा? अरे, आब त' हम खुजल आसमानक मुक्त पंछी छी। (गबैत अछि)

'पंछी बनू उड़ती फिरूँ मस्त गगन में
आज मैं आजाद हूँ दुनिया के चमन में'

झुनमा : एतेक आजाद नञि छें, जतेक बूझै छें।

मंगतू : माने?.. जीवन एतेक सुंदर भ' सकै छै, हम त' ई सोचबो नञि केने छलहुँ। देख, ई रोडक बत्ती.. बरिसातक पानि मे केहेन सतरंगी किरण छोड़ैत अछि। ई चाकर रोड, एखन शांत अछि - भिनसर होइत होइत कतेक जगजियार भ' जाइ छै.. (गबैत अछि) 'ई सहर बहुत हसीन है।' (आगाँ बढ़ैत अछि।)

झुनमा : कत' जा रहल छें।

मंगतू : पता नञि। हम त' खाली बूझ' चाहै छी, ई पूरा-पूरा देहक सुख उठाब' चाहै छी। भगवान, हम अहाँ के कएक बेर गारि पढलहुँ। आई अहाँ के धनबाद दइ छी। हमरा माफी द' दिय'.. (आओर तेजी स' चलैत अछि) की करब! लोक आओर जहन दुखी होइ छै, अहिना बाजै छै.. (खूब तेज-तेज चलैत अछि।)

झुनमा : रौ, हवाइ जहाज जकाँ कियैक उड़ल जा रहल छें?

मंगतू : चल, चल (गबैत अछि) 'दो दीवाने शहर में, रात मे या दोपहर में, आबो दाना ढूँढ़ते हैं, इस आशियाना ढूँढ़ते है।'

झुनमा : रौ, हम थाकि गेलहूँ। गमे - गमे चल।

मंगतू : हमर त' मोन भ' रहलए जे हम ई पूरा-पूरा धरती मापि ली, बामन भगवान जकाँ.. पूरा संसार के अपन अंकबारि मे भरि ली.. खूब चिकरि-चिकरि के गाबी

'आज मदहोश हुआ जाए रे, मेरा मन, मेरा मन, मेरा मन।

शरारत करने को ललचाए रे, मेरा मन, मेरा मन, मेरा मन।'

झुनमा : (डेराइत) मंगतू, एना सनकाह - बताह जकाँ नञि कर। हमरा डर होइए।

मंगतू : झुनमा, हमरा आइ केहेन लागि रहलए, बूझल छौ?

झुनमा : .. ..

मंगतू : आई हमरा मोन मे एकटा कामना, एक गोट इच्छाक मूर्ति बनि रहलए.. प्रेमक नरम अनुभूति.. आइए.. एखने.. लागि रहलए जे कोनो नरम, नाजुक अंचरा मे अपन मुंह तोपि ली.. ओकर प्रेम भरल स्पर्श हमर केश, देहक रग-रग मे पहुँचए आ अमृतक समुन्दर मे गहीर, खूब गहीर ल'

जाए.. जत' प्रेम स' भरल संसार हएत..कियैक भ' रहल अछि एना?

झुनमा : भ' गेल ई आमिर खान.. आब गाओत 'आती क्या खंडाला!'

मंगतू : प्रेमक लालसा अई स' पहिने नञि भेल छल कहियो! झुनमा, सुन, तोहर भौजी.. (कनेक लजाइत अछि)

झुनमा : भेल आब ई सलमान खान (गाबैत अछि)

तेरे बिना, तेरे बिना..

(मंगतू आगाँ बढ़ैत अछि.. पाछू-पाछू झुनमा सेहो..)

मंगतू : देख, ई श्रमक जीबैत रूप.. मेहनति स' लोक एतेक ने थाकि जाइत छै जे.. ओ कहबी छै ने जे 'नींन नञि जानै टूटल खाट।' हमहू.. एकरे आओर जकाँ खटब.. एतेक जे बस, खसिते फोंफ काटब शुरू। (फोंफ काटैत अछि।)

झुनमा : मुदा तों काज की करबें रे! के देतौ काज तोरा? लूल्हि-नांगड़ि. मंगतुआ के सभ किओ जनैत छै.. मुदा आजुक ई नमगर, सोहनगर रितिक रोसन के काज के देतौ? जास्ती स' जास्ती उपदेस देतौ, जाहि स' पेट चलतौ नञि।

(फोंफ काटबाक नकल करैत मंगतू एकदम स' चेहाइत अछि। फोंफ बीचहि मे रूकि जाइत अछि। मुंहक चमक, खुशी बिला जाइत अछि।)

मंगतू : ऐं? की करब हम? (हँसैत अछि।) एकदम सही पकड़लें तों.. की करब हम?.. नञि, की क' सकै छी हम? ..रौ, तोंही बाज ने, की क' सकै छी हम?

झुनमा : खाली भीख माँगि सकै छें। सेहो लोथ-नांगर भ' क! एहेन मुस्टंडा भ' क' नञि ।

मंगतू : एह! एना नञि बाज । एतेक दिन बाद हमरा ई सनेस भेटलए, ओकरा.. (हठात ओकर गर्दनि पकड़ि लेइत छै।) फेर जुनि बजिहें ई.. रौ तों त' चारि हाथ-गोर बाला आदमी भेलैं। तो की बूझबें लोथक पीर।

झुनमा : (गर्दनि छोड़बैत) त' कलक्टरी कर। डाक्टरी कर। हम तोहर चपरासी, कंपोडर बन' लेल तेयार छी।

मंगतू : तों हमर हौसला बढ़ेबाक बदले ओकरा खसा रहल छें। हमरा लग डिग्री अछि जे..

झुनमा : त' कोनो धंधा क' ले.. किरानाक दोकान, कपड़ाक दोकान.. किछुओ.. हमरा अपना दोकान पर राखि लिहें।

मंगतू : कियैक मजाक क' रहल छें.. धंधा शुरू कर' लेल पूँजी चाही.. तों मदति की करबें, उन्टे.. चलि जो हमरा लग स'..

झुनमा : जाइ छी, जाइ छी। काल्हि फेर एबौ। अई बेर सिंघाड़ा खुअबिहें..

(जाए लागै छै। बीच-बीच मे मुड़ि-मुड़ि क' देखै छै जे मंगतू ओकरा बजा लियए। मंगतू ओकरा दिस ध्यान नञि देइत अछि। ई देखि ओ अपने स' एक कोन्टा में ठाढ़ भ' जाइत अछि आ मंगतू के देखैत अछि..)

मंगतू : (जेना फेर अपना धुन मे) एह! एतेक सोहनगर समय। भोर भ' रहल छै..। हे, ई सुनू, पाखीक स्वर। भोरक मंद- मंद बेयार। हे देखियौ, ई सूतल अछि। एक उठल कि सभ किओ उठि जाएत.. बल्कि, देखियौ, जनीजात सभ त' उठियो गेलीह। ओ ओम्हर चूल्हि सुनगा रहल छै.. एम्हर ई अपना बच्चा के दूध पिया रहल छै.. आ ओकरा देखियौ, ऊ चाहक पानि सेहो चढ़ा देलकै.. ओम्हर एकटा बच्चा माय के देखि मुस्किया रहल अछि.. कतेक सोहनगर छै.. पाजेबक छुन-छुन जकाँ जिनगी छनकि

रहल अछि.. मंगतू.. रौ.. हिम्मत जुनि हारि.. काज भेटतौ तोरा.. धैरज धर..

(ओ ई सभ बाजिए रहल अछि कि पाछू स' बम फुटबाक भयंकर आवाज़ होइत छै। पलखतिए मे रोआ- कन्नटि, भागा दौड़ी मचि जाइत अछि। मंगतू किछु नञि बूझला सन्ते अकबकायल ओहि ठां ठाढेक ठाढ रहि जाइत अछि। दिग्भ्रमित भेल ऊ चारू दिस देखैत अछि, फेर माज़रा सभ बूझ' मे अबितही चिकर' लागैत अछि..)

मंगतू : अरे, ई की भेलै.. ऊ दूध पियबैत माय! .... बच्चा ओकरा हाथ स' .... एतेक दूर खसि ..... आ ओ अपने गेंद जकाँ.. माथ फाटि गेलै.. ओ, ओ चूल्हि सुनगबैत स्त्री.. ओकर त' हाथे-गोर उड़ि .. अरे, ई निचिन्त सूतल लोक सभ.. कागज-पत्तर, खढ -पात जकाँ उड़िया.. (चिकरैत अछि) रौ, .. रौ रछसबा सभ.. जल्लाद, कसाइया सभ.. रौ, जिनगीक एक गोट साँस त' द' नञि सकै छें, मुदा.. कियैक छीन रहल छें हमर जिनगी? कियैक लोथ बना रहल छें हमरा? हमर अपराध की?

(पार्श्व स' ध्वनि.. जन्म लेबक अपराध केने छें तों सभ.. आब भोग।)

(चीख-पुकार एखनो मचल छै। मंगतू असहाय सन ठाढ़ अछि.. हठात ओकर कान में जोरदार आवाज अबैत छै 'भाग रौ, बम.. भाग, जान बचो.. भाग रौ..' (भीड़क भागबाक ध्वनि। मंगतू, सेहो बिनु किछु बूझने बदहवास चिकरैत भाग' लागैत अछि.. 'भाग रौ, बम.. भाग, जान बचेबाक छौ त' भाग.. भाग रौ..' रसे- रसे अई भगदडि. मे सभटा पात्र सम्मिलित भ' जाइत छथि.. सभ चिकरि. रहल छथि.. 'भागू, जान बचाऊ.. भाग रौ.. भाग..' रसे- रसे स्वर शांत होइत अछि.. सभटा चरित्र एक-दोसराक हाथ पकड़ने मंचक एकदम अग्रभाग मे ठाढ़ भ' जाइत छथि। समवेत स्वर मे सभ बाजैत छथि।)

समवेत स्वर : हुअए खाहे युद्धक विभीषिका

वा खूनक बाजार गर्म
मुदा नञि थाक' बला, हार' बला
हम! ओ परम पिता,
ओ काल..
अहीं सं', हँ, अहीं स' अछि टक्कर हमर..
हम खसब, लड़ब, मरब,
मुदा फेर ठाढ़ भ' उठब
साठि हजार सगर-पुत्रक भाँति
ई संसार खल अछि, कामी अछि,
दुष्ट अछि, पिशाच अछि,
मुदा तइयो छै अई मे जीवनक आभा
जे अछि सत्यो स' बढ़ि क' सत्य..
शिवो स' बढ़ि क' शिव
अमरो स' अमर
सुंदरतो स' सुंदर..
जीवन, नञि अछि एतेक सस्त
जे बिछलि जाए
मुट्ठी मे बंद बालु जकाँ
हम जीयब, आ पारब रेघ
कालोक सम्मुख
ललकारब मौत के
बढ़ब विजय पथ पर
रचब नित नवीन अभियान
नित नवीन विहान
नित नवीन वितान

(अंतिम पंक्ति बाजैत-बाजैत सभ किओ आधा-आधा हिस्सा मे बँटिक' मंचक दुनू ओर ठाढ़ भ' जाइत छथि। प्रकाश मंगतू पर.. ओ अपन

पहिल स्थिति मे अछि.. आ निन्न मे बड़बड़ क' रहल अछि.. 'भाग रौ, बम.. भाग, जान बचेबाक छौ त' भाग.. भाग रौ..' । ओ नींने मे एम्हर स' ओम्हर भागबाक प्रयास क' रहल अछि। सभ पात्र वृत्ताकार मे ओकरा घेर लेइत अछि। फेर सभ एक दोसराक हाथ पकड़ि पाछू दिस झुकैत अछि, जाहि स' एकटा मानव-पुष्पक निर्माण होबैत अछि.. सभ कविताक अंतिम चार पंक्ति बाजि रहल छथि.. 'बढ़ब विजय- पथ पर, रचब नित नवीन अभियान.. 'बाजैत-बाजैत सभटा पात्र फ्रीज भ' जाइत छथि। परदा खसैत अछि।)

# # #

बलचन्दा

(मैथिली नाटक)

विभा रानी

(मंच पर अत्यन्त मद्धम प्रकाश.. मद्धम स्वर में एक गोट रहस्यमय संगीतक धुन, ब्रह्मांडक प्रतीत कराबइत.. प्रकाश सेहो समाप्त । मंच पर घोर अंधकार। लगभग एक मिनट धरि अंधकार आ पूर्ण शांतिक बाद एकगोट नवजातक क्रन्दन। क्रन्दन तेज होबैत-होबैत अंत में शनै.. शनै विलीन भ' जाइत अछि ..। मंच पर पूर्ण शान्ति आ एखनो अंधकार अछि। पुन: लगभग एक मिनटक बाद एकटा पातर लकीर सनक प्रकाश मंचक एक सीध स' दोसर सीध धरि अबैत अछि। ओ प्रकाश बढ़ैत-बढ़ैत एकटा वृत्त मे बदलैत अछि। एक स्त्रीक ओहि वृत्त मे कोरा मे एकटा गुड़ियाक संगे प्रवेश ..। गुड़िया के सोझा मे राखि ओ ओकरा पाछां ठाढ भ' जाएत अछि आ बाजैत अछि। ओकर स्वर मे प्रसन्नता आ आत्म-गौरवक भाव छै)

स्त्री: हम धरिणी.. हम धरित्री
सीता हम - हम सावित्री
हम द्रौपदी - रम्भा, मेनका
श्रद्धा हम, हमही इड़ा
प्रेमक सुख, विछोहक पीड़ा
समस्त विश्र्व मे हमरे स' त्राण
देवी, माँ, सहचरी, प्राण

देवी हम
दुर्गा, काली, गौरी, शक्ति,
बिनु हमरा, नञि ई सृष्टि

(विद्यापतिक भजन आरंभ होइत अछि.. स्त्री कोरा मे बच्ची के ल' क' ई गीत गबैत अछि। गीतक संगे-संग ओ गुड़िया के दुलारैत-मलारैत अछि।)

जय, जय भैरवि असुर भयाउनि
पशुपति भामिनी माया..

सहज सुमति बर दिउऊ गोसाउनि
अनुगति, गति तुअ पाया।

(भजन समाप्त होइत-होइत ओ गुड़िया के मंचक पाछां राखि अबैत अछि आ फेर सासुक चरित्र मे आबि क' बाजैत अछि। स्त्री सासु, पति आदिक पात्र नेमाहइत अछि।)

सासु : एक त' आनि जातिक माउगि आ ओहि पर स' पहिल बच्चा बेटी? किन्नहु नञि।
पहिल संतान त' बेटे।

पति : मां, किऐक अहां अतेक अपस्यांत होइत छी? अरे, निचिन्त रहू ने। जे अहां कहबै, सएह हेतै।

स्त्री : रोहित, ई हमर आ अहांक प्रेमक प्रथम पुष्प अछि। एना जुनि करू। एना जुनि करू प्लीज़।

पति : हमरा लेल मांकेर इच्छा सर्वोपरि। ..चलू, अहांक मोन राख' लेल एकटा बेटीक मंजूरी सेहो। मुदा पहिल बेर त' बेटे।

स्त्री : (स्त्रीक नज़रि जेना अपन पिता पर पड़ैत छै। ओ चिकरइत अछि) बाउजी, हमरा बचा लिय'। हमर बेटी के बचा..

बाउजी : बेटी, चल हमरा संगे। एक बेर बच्चाक मुंह देखि लेतीह समधीनी जी त' अपनहि ममति उठि एतै।

सासु : खबरदार समधि। बेटी के उकसाऊ जुनि। मुंहे देखला स' ममति उपजितिऐक त' अपनही हाथे अपनही तीन-तीनटाक नरेटी नञि टीपने रहितियहुं। ई हमर घर अछि। अहांक बेटी ओ जहिया छली, तहिया छली। आब ओ ई घरक पुतौहु छथि। हुनका अइठांक केदा- कानूनक

मोताबिक चल' पड़त, वरना हमर बेटा लेल त' एखनो एकटा के बजाऊ त' दस टा दौगलि आएत। एह..एक त' जाने कत' स' उठा आनल आनि जातिक रांड़ि..

बाउजी : मुदा बेटा -बेटी त' अपना हाथक गप्प नञि छै ने?

सासु : मर्र। तहन ककरा हाथ मे छै?

बउ. : विज्ञानक हाथ मे। डाक्टर लग जाउ। ओ अहां के बता देत, जे बेटा बेटी बिधिक लिखलाहा नञि होइत छै।

सासु : हे, हमरा ई डागदरी फ़ागदरी नञि सिखाऊ।

बाउ : सीख' पड़त समधीनी जी। वरना भगवानक लेख मानि क' जनम जनम स' लोक आओर स्त्री के एकरा लेल दोषी बनबैत आएल अछि। आ जनम जनम धरि ओकरा बनबिते रहत।

सासु : हमरा एतेक कपड़फ़ेंच मे पड़' नञि अबैत अछि। आइ काल्हि डाक्टर आओर के सभ बूझल रहैत छै। हाथ लगबितहिं बता दइत छै जे बेटा कि बेटी..।

बाउ : त' समधीनी जी, वएह डाक्टर ईहो बता देत जे बेटा-बेटी जनमाब' मे स्त्रीक अपन कोनो विशेष भूमिका नञि होइत छै। ओ त' मात्र धरती अछि, बीज धारण करएवाली। आ जेहेन बीज, तेहेन फ़सील।

(सासु किछु नञि बाजि कड़गर नज़रि स' बाउजी के आ फ़ेर स्त्री दिस देखैत अछि।)

स्त्री : नञि, हम नञि हटाएब। (पति स') रोहित, बेटी स' एतबहि दुश्मनी छल त' कियै केलहुं हमरा स' विवाह? अरे, अहूं त' एक गोट स्त्रीएक कोखि स' जनम लेने छी। अहांक माइयो त' एक गोट स्त्रीए छथि ने.. आ सभ किओ जौं अहिना बेटी स' छुट्टी चाहत त' कोना चलतै ई सृष्टि? कहू ने, कोना क' चलतै ई सृष्टि?

(स्त्री भहराक' खसि पड़ैत अछि। पार्श्र्व स' करूण संगीत। स्त्री रसे-रसे उठैत अछि आ रसे- रसे सामान्य लड़की सनक व्यवहार करैत अछि। ओकर व्यवहार में कॉलेज जाएवाली लड़कीक अभिनय अछि। ओ हड़बड़ी मे अछि। ओ स्कर्ट पहिरबाक, कंघी करबाक, किताब-कॉपी हेरबाक, चप्पल पहिरबाक, बैग कन्हा पर टँगबाक आदिक अभिनय करैत अछि- ई सभ करैत-करैत ओ हबड़ि हबड़ि बाजियो रहल अछि -

स्त्री : माँ, हम कॉलेज जा रहल छी..। बाउजी के कहि देबन्हि आब' लेल..। आ अहूँ आएब हमर नाटक देख'। आ हं मां, भौजी के सेहो नेने आयब.. माँ, भौजीक मुंह पर स' कनेक घोघ हटब' दियऊ ने! हे देखियौ- देखियौ, अन्हरिया मे पूर्णिमा भ' गेलीह.. (नकली डर) नञि.. मारू। नञि.. नञि, हम दूध नञि पीब.. बाप रौ, उन्टी होब' लागैत अछि.. बाउजी के कहि देबन्हि ने.. जे हम पी लेलहुँ दूध.. हमर सुन्नर- सुन्नर, नीक नीक मां.. अछा, आब हम चलै छी। हमरा देर भ' रहल अछि। (कहैत-कहैत मंच स' निकलि जाइत अछि। संगीत.. शहनाईक धुन..। मंच पर कोनो कार्यक्रम होयबा सनक हलचल। स्त्रीक उद्घोषिकाक रूप मे प्रवेश। ओ मंचक एक कोना मे ठाढ़ भ' क' उद्घोषणा करैत अछि।)

स्त्री/पु. : नमस्कार। हमर कॉलेजक वार्षिकोत्सव मे अपने सभक हार्दिक स्वागत आ अभिनन्दन। मनोरंजन, आमोद आ आनन्दक संगे- संग अई वार्षिकोत्सव मे हम सभ सामाजिक सरोकार स' सम्बन्धित बहुत रास कार्यक्रम सेहो केलहुं अछि, जेना सड़क सफ़ाई अभियान, वृक्षारोपण, महत्वपूर्ण साहित्यकारक सम्मान, वंचित वर्गक नेत्रा लेल विभिन्न क्रिएटिव वर्कशॉप, आदि- आदि। आइ एकरे अगिला कड़ी मे प्रस्तुत अछि, समाजक एक गोट आओर ज्वलन्त समस्या स' अहां सभ के दू-चारि करबइत ई नाटक- बलचन्दा।

(मद्धम अंधकार.. अंधकारे मे गीत ..)

'गै मैना, अंगना ओकरा जइहें
रसे-रसे, कहिहें खिस्सा
जोर स' जुनि बजिहें, गे मैना..

(स्त्री मंच पर अबैत अछि.. संवाद बजैत अछि, जेना मंच पर अभिनय क' रहल हुअए।)

स्त्री : धिक्कार अछि ओहि समाज पर, जे बेटी के अस्तित्व मे ऐबाक पहिनही ओकरा नष्ट क' देब' चाहैत अछि.. ई धरती.. ई धरतीयो त' एक गोट स्त्रीए अछि।.. देखियौ एकरा, सभ किओ एकरा दिन-राति धांगैत रहैत छथि, एकर करेज कोढ़ि के काटि-काटिक' बड़का-बड़का इमारत बनबैत छथि.. अमृत स' भरल एकर नदीक धार के अपना मर्जी स' एम्हर स' ओम्हर क' देइत छथि.. एकर कामनाक ज्वार के बाँध मे बाँधि दइत छथि.. मुदा तइयो ई धरती, उन्टे हमरा रौद, पानि, छाँहरि, अनाज सभ किछु दइत रहैत अछि.. कहियौ, जे जौं ई धरती ई सभ नञि करतीह त' हमर सभक अस्तित्व रहत की? हम- कन्या, स्त्री, माय, बहीन, बेटी- हमहूँ त' धरतीए छी.. धारण करयवाली.. आ देखियौ, आइयो कएलहुँए धारण- अई परंपरा के आगाँ बढ़ाब'वाली के..। आब दियऊ एकरा अहि संसार मे- अहांके धारण कर' लेल, अहि सृष्टि के आगां बढाब' लेल। अरे, वीर-विहीन धरती से सृष्टि त' चलि जाएत, मुदा बेटी- विहीन धरती स' सृष्टि नष्ट भ' जाएत। आब दियऊ एकरा। हमरा लागल जे हमर अजन्मल संतानक संगे-संग अई धरती परक अनेक अजन्मल बेटी सभ सेहो अपना- अपना माता-पिता स' कहि रहल अछि (स्त्रीक कविता वाचन बालिकाक स्वर मे।)

हे हमर भावी माता-पिता
हमरा पर नञि
त' करू हुनका आओर पर किरपा
जिनगी जनिक आरंभ भ' क' हमरा स'
समाप्त होइत अछि हमरे पर..
सोचू, जे नञि हएब हम
त' के धोअत भरि-भरि छिट्टा ऐंठ बासन
के खाएत भाईक अवशिष्ट भोजन
कोना नेबाहेम हिंदू धर्मक महादान - कन्यादान!
कोना मेटायत नोचनी हमर सासु, ननद, स्वामीकेर
जौं नञि भेटत दहेज मे डिबिया माचिस केर।
कोना चलत अखबारक कार्य-ब्यौपार
जाधरि छपत नञि,
नान्हि-नान्हिटा स' अपनही लोकक बलात्कार!
आ सोचू कने, नञि हएब हम',
त' कोना मनाएब अतंर्राष्ट्रीय महिला दिवस
बालिका वर्ष, नारी सशक्तीकरण
ककरा राखब पर्दा मे कि बुर्का मे
ककरा जोखब सोनाक सिक्का मे?
हमहीं त' छी अमीना वा सोनाबाई!
तैं, आब' दिय' हमरा, आब' दिय' हमरा,
जाहि स' बदस्तूर चलैत रहय
अहाँक नाम-सुनाम
आओर किछुओ नञि त'
घरे-घर त' पूजल जाएब
जहन लाल चूनर, भरि माँग सेनूर
आ सोलह सिंगारक संग
हमरा अहां रूप कुँवर बनाएब..'

(तेज संगीत आ तकरा बाद एकदम शान्ति.. स्त्री मंच पर आबि सभके नमस्कार करैत अछि.. हॉल मे थपड़ी..।)

स्त्री : (जेना कोनो सम्मोहन मे) हमर जनम पर हमर बाउजी एतेक प्रसन्न भेल छलाह जेना तीनू लोकक राज-पाट हुनका भेटि गेल होइन्ह। सोहर, बधावा, पमरियाक नाच, भरि गामक भोज, मिठाई..। एह, एहेन कोनो वस्तु उठा नयिं रखलाह। हे, देखियौ, आइ-माइ-दाइ सभ सोहर गाबि रहल छथि आ बाउजीक हुनका सभक संगे रार- तकरार सेहो चलि रहल अछि। आ हम, हम त' अपना मायक कोरा मे आराम स' सुतल छलहुं। (शनै.. शनै.. प्रकाश बदलइत अछि.. स्त्री कोरा मे एक गोट नेन्ना के ल' क' बैसैत अछि आ गीत गबैत अछि। गीतक बीच मे ओकर अन्य देखभाल, काजल लगेनाइ, मालिश केनाइ, स्नान करबेनाइ, दूध पियेनाइ आदि कार्य-व्यापार करैत रहैत अछि।)

कहँवा ही रामजी जनम लेले
कहवाँ बधइया बाजे हो
ललना किनकर हियरा जुड़ाएल
खेले आएल अंगना हो
अजोध्या मे रामजी जनम लेले
मिथिला बधइया बाजे हो
ललना दशरथ के हियरा जुड़ाएल
खेले आएल अंगना हो

स्त्री : सोहर समाप्त भेलै कि सभ किओ उठेलीह बधावा।

(सोहरक धुन क्रमशः बधावा मे बदलइत अछि..स्त्री नेन्ना के ल' क' मंचक पाछां चलि जाइत अछि। फ़ेर चुन्नी उतारि अथवा पमरियाक रूप में बधावा गबैत अछि आ नचैत अछि)

रूपइया माँगे ननदी, लाल के बधाई
दसे रूपइया मोरा ससुर के कमाई
पाँच ले लू ननदी, लाल के बधाई!

बाउजी : बाउजी काकी स' बजलाह- ई की भउजी? रामजीक सोहर आ लालक बधाई? अरे, हमरा घर मे राम जी नञि, सीता जी, पार्वती जी, लक्ष्मी जी, सरस्वती जी.. दुर्गा जी सभटा देवी एकरूप भ' क' ऐलीहए! हुनका लेल सोहर गबियौ, हुनकर बधावा सुनबियौ!

औरत : काकी कहलखिन्ह- अहूँ किसुनदेव बउआ, सठिया गेलहुँए की? अरे, बेटी लेल सोहर आ बधावा? ओकर जनम खुसनामा छै की? अरे, जनमाबी, पाली-पोसी, पढ़ाबी-लिखाबी, बियाह मे भरि-भरि ढाकी दान-दहेज दी, तकरा बाद परब-त्यौहार, बाल-बच्चा.. जिनगी भरि ई नेग त' ई रसम त' ई पाबनि त' ई तिहार। बाप रौ बाप.. भारी खर्चाक घर छै भारी खर्चाक घर..। एहेन मे के राग जै जैवन्ती सुनाओत? कहू त' भला।

बाउजी : बाउजी काकी के बारैत कहलखिन्ह- एना नञि बजियौ भउजी। स्त्री भ' क' स्त्रीए लेल.. अहाँके नञि बूझलए.. रहिकावाली सभ बेर दगा द' जाइत छली.. अरे, बेटा सभक की? ओ सभ त' खानगी पढ़ैत, एम्हर ओम्हर डोलैत-डालैत कोनो ने कोन जुगुत बैसाइये लेत। असली कथा त' छै बेटीक..। आ बिनु कन्यादाने हम सभ अई मनुक्ख जनम स' उऋण भ' सकै छी की? एक-एकक' सात..सात पूतक बाद.. अई देवीक आगमन.. धन्न भाग हमर.. गाऊ, गाऊ... ई देवीक स्वागत करू..(पार्र्व स' गीत.. स्त्रीक पूजा करबाक अभिनय)

निमिया के डार मइया लागले हिंडोलबा कि रूनु झुनु
मइया खेले ले सिकार कि रूनु झुनु
खेलिते खुलिते मइया लागले पियसवा कि चली गेली
मइया भगत के द्वार कि चली गेली

पिता : बाउजी फ़ेर काकी के चेतेलखिन्ह- हमर कान मे बेटीक बधावा पड़बाक चाही भउजी, नञि त' अहाँ स' हमर बाजब भूकब बन्न!

भउजी : काकी फ़ेर उपराग देलीह- देखियौ बताह के! बेटीक जनम पर जहन प्रसन्नते नञि त' केहेन सोहर आ केहेन बधावा .. मुदा के कहय अई बौराहा के?.. सात-सात गो बेटा भेल, किछु नञि कएल आ बेटी भेला पर अपने ताले नचने घुरैय'.. कत' स' आनी गै दाइ बेटीक सोहर आ बधावा?.. अबै जो गै, बेटाक ठाम पर बेटी क' दही आ गाबि दही..। भ' जेतै गीत बेटीक आ किसुनदेव बउआक जी सेहो जुड़ा जेतै..

रूपइया माँगे ननदी लाली के बधाई
सौए रूपइया मोरा पिया के कमाई
छदाम ना दूँ ननदी लाल के बधाई!

स्त्री : हमर पीसी तुनकि के बजलीह- 'वाह चाची वाह! लाल के बधाई त' दस टाकाक कमाई! लालीक बधाई त' सौ टाकाक कमाई आ ओहि मे स' पांच टाका ननदि के। आ लाली के बधाई त' सौ टाकाक कमाई .. आ तइयो एकोटा पाइ ननदि के नञि! एह।'

भउजी : काकी बरजलीह- गै, बेटी भेलै भारी खर्चाक घर! बाप बेसी नञि कमेतै त' कोना ओकर घर भरतै.. चल, चल, गीत गो..

सुनू राजा, घर पइसा न कौड़ी
सासु जे अइहें, देवता पुजइहें
देवता पुजौनी के नेग-जोगा मंगिहें
बाहर से पिया तुम ललकारो,
भीतर से हम पिया मुक्का देखाएब। सुनू राजा..

स्त्री : भरि गाम मे सोर भ' गेलै जे बाउजी हमर माय के हमर जनमक खुशनामा मे ठोस सोनाक सीताहार देलखिन्हए। बाउजी माय से कहलखिन्ह-

बाउजी : हे लिय' रहिकावाली! अहाँक सीताहार! कतेक सुन्दर बेटी देलहुँए अहाँ हमरा.. हम एकर नान्हि-नान्हि टा पएर मे पायल पहिराएब, एकर केश मे लाल-लाल फीता बान्हब, छोट-छोट हाथ मे रंग बिरंगा चूड़ी पहिराएब.. कन्हा पर ल' क' घूमब.. जतेक चाहत, जत' चाहत, ततेक आ तत' पढ़ाएब.. डाक्टर, इंजीनियर, कलक्टर, ई जे चाहत, बनाएब.. खूब धूमधाम स' एकर विवाह करब.. ।

स्त्री : (युवतीक स्वर व अभिनय मे) बाउजीक स्नेहक छांहरि मे हम पलैत गेलहुं, बढैत गेलहुं। हम इंजीनियर बन' चाहैत छलहुं। मुदा हमर माय मोहल्लाक आइ-माइ-दाइक कहब मे आबि गेलीह आ पड़ि गेलीह हमर विवाहक पाछां। हमर की? हमर त' एक्के गोट शरणस्थली कहियौ कि दाता दरबार- हमर बाउजी। से हम लगेलइयन्हि हुनका लग अपन गोहारि.. बाउजी, हम इंजीनियर बनब.. देखियौ ने!

माय कहै छथिन्ह जे हमर बियाह.. बाउजी.. हम एखनि पढ़ब.. हम इंजीनियर बनब बाउजी प्लीज! हम एखनि बियाह नञि करब। बाउजी, प्लीज़... (स्त्रीक चेहरा पर पहिने अदंक आ फ़ेर प्रसन्नताक भाव अबै छै, जेना पिताक सहमति भेंटि गेल हुअए। ओ प्रसन्नता स' पूरा मंच पर घूमि जाइत अछि..) हं, हम इंजीनियर बनब.. अपना गामक पहिला लड़की.. जे इंजीनियर बनत.. आई धरि जे बनल से खाली डाक्टर कि टीचर अथवा नर्स.. हम इंजीनियर..बाउजी, अहां कतेक नीक छी। हम कतेक बड़ड सौभाग्यशाली जे अहां सन पिता भेटलन्हि हमरा।

(प्रेमक अनुभूतिक अभिनय.. ओ प्रसन्नता स' नाचैत अछि आ विद्यापतिक गीत पढैत अछि-

'सखि की पूछसि अनुभव मोय,
सेहो पिरीत अनुराग बखानति,
तिल तिल नूतन होय।

स्त्री : हम रोहित आ रोहित संगे अपन भविष्यक स्वप्न मे डूबल छलहुं कि एकदिन मा भरि घर के अपना माथ पर उठा लेलकन्हि। चिकरि-चिकरि के बाउजी स' कह लगलन्हि-

माँ : नाक कटाक' आबि गेल ई अहाँक सुलच्छनी! जे कहियौ नञि भेल खन्दान मे, से आब ई क' रहल अछि। बेसर्मीक हद छै। प्रेम, एह, देह मे जेना आगि सन्हियाएल छलै..

बाउजी : रहिकावाली, आस्ते बाजू। ई बेटी हमर थिक। जेना हम कहब, तेना हएत। आखिर जिनगी हिनका आओर के संगे संगे नेमाह' के छैक। जाहि मे ई दुनु सुखी रहथु। आ लड़िका नीक छै, पढनुक छै। देखहु-सुनय मे कोनो

राजकुमार स' कम नयि छै। अरे, हमहूं तकितहुं त' एकरा स' बेसी नीक वर भेटितय, ताहि मे संदेहे.. खाली जातिए कने दोसर छै ने..।

मां : किन्नहुं नञि होब' देबै हम ई संबंध.. अहां स' हम कहि रहल छी।... गै दाइ गै दाइ, गै कियै जनमेलौं एहेन धिया के रौ बाप..जनितहुं त सोइरीए मे नून चटा क' मारि देने रहितियैक गै दाइ.. अरे, अहां ठाढ़ ठाढ़ हमर मुंह की देखि रहल छी? ताकू कोनो हरही सुरही, बूढ़, अधबयसू.. दुहेजू.. ककरो संगे.. भगाऊ एकरा..

बाउजी : से नयि हेतै रहिकावाली। विवाह त' ओही ठां हेतै, जत' हमर बेटी कहत।

(वर्तमान। स्त्री मंच पर अबैत अछि।.... पार्श्र्व स' समदाओन चलैत अछि। स्त्रीक विवाहक बाद विदा लेबाक अभिनय। एकरा ओ अपन लाल ओढनी से प्रतिध्वनित करैत अछि। समदाओन सुनाइ पड़ैत अछि)

बड़ा रे जतन स' सिया धिया पोसल

सेहो सिया राम नेने जाए

आगू आगू रामचन्दर, पाछू पाछू डोलिया

तही पाछू लछुमन जे भाई

लाल रंगे डोलिया, सबुज रंग ओहरिया

लागि गेलै बत्तीसो कहार ।

(समदाओन धरि स्त्री मंचक एक ओर से दोसर दिसि जाइत अछि, जेना नइहर से सासुर पहुंचि गेल हुअए।

स्त्री : सासुर पहुंचलाक बाद 'कनिया एलै', 'कनिया परीछू'क सोर भेलै। गाड़िये मे हमरा परीछि- तरीछि के सभ किओ हमरा आगं बढेलक। चंगेरी मे पएर दइत हम आगां बढलहुं। आइ-माइ-दाइ सभ फ़ेर गीत शुरु केलीह। गीत,

धुन, बदलइत अछि। स्त्री जेना चंगेरी मे पएर राखैत आगां बढि रहल हुअए। गीतक स्वर)

दुल्हीन धीरे-धीरे चलियऊ ससुर गलिया
ससुर गलिया ओ भैंसुर गलिया
तोरे घूँघटा मे लागल अनार कलिया

स्त्री : चंगेरी-यात्रा के बाद हम पाओल जे हम सभ एक गोट दूरा पर ठाढ छी- दूर छेकाइ लेल। रोहित सभ के यथायोग्य नेग-तेग देइत आगां बढलाह, आ पाछू-पाछू हम। कोहबरक बिध-बेबहारक बीच फ़ेर गीत उठलै- (कोहबरक गीत। स्त्री द्वारा कोहबरक बिध, खीर खुअएबाक आदिक अभिनय)

आज फूलों से कोहबर भरा जाएगा
आज दूल्हा ओ दुल्हन सजा जाएगा
जरा सा तो टीका पहन मेरी लाड़ो
तेरे बचवे पर सबका नजर जाएगा।

(प्रेमक प्रसंग.. स्त्री द्वारा प्रेमक नाना अभिव्यक्तिक आ चरम संतुष्टिक बाद गहीर नींद मे सुतबाक अभिनय... नीने मे जेना नवजातक परिकल्पना।.. स्त्री ओकरा गसिया लइत अछि.. चुम्मा लइत अछि.. अपन पेट के सोहरबइत अछि.. सोहरबइत-सोहरबइत चेहाइत अछि.. हमरा स' नञि भ' सकत, एहेन अभिनय.. कल्पने मे बच्ची के बेर-बेर पँजियबैत अछि.... ओ कनेक नर्वस अछि.. स्त्रीक पतिक पएर पड़बाक, रूसबाक, मनेबाक अभिनय.. प्रताड़ित हेबाक अभिनय.. स्त्री डेकरैत अछि..)

स्त्री : बाउजी! हमरा बचा लिय'..। हमर बेटी के बचा लिय'। आइ धरि अहां हमरा अपना पुतरी मे सन्हियाक' राखलहुँ.. मुदा हम.. हम अपन बच्ची के.. (पति स') रोहित, रोहित, प्लीज.. अरे, कोना अहाँ एतेक निष्ठुर भ' सकै छी..? की फेदा अई जिनगी स'? एहेन जिनगी? हमर पढ़ाई बिच्चहि मे छोड़बा देलहुँ.. गामक पहिल लड़की के इंजीनियर बनबाक स्वप्न.. अधरस्ते मे दम तोड़ि देल.. संगे छलहुं ने हम दुनू, एके क्लास मे। अहाँ स' कम त' किन्नहुं नञि छलहुँ.. कखनो अहाँ फर्स्ट आबी, कखनो हम.. विवाह स' पहिने एतेक रास चर्चा, डिस्कशन्स, ज्वाइंट स्टडी.. आ विवाहक बाद सभटा सुड्डाह.. पूछला पर एक्कहि टा वाक्य- मायक इच्छा.. हुनका नोकरीबला पुतौहु पसिन्न नञि.. अंग्रेजी बाज-भूक'बला लड़की हुनका नञि चाहीं । त' जहन इयैह सभ छल, तहन विवाह स' पहिने कियैक ने कहल? .. गामक पहिल लड़की हम, जे प्रेम कएल.. भौजी सभ की -की सभ नञि सुनौलन्हि। भौजी सभ माय के सुना सुना के कहितथिन्ह- 'हम सभ जौं एना कएने रहितहुं, त' हमर बाउजी त' हमरा सभ के जीबिते खाल खींचि के भुसि भरबा देने रहितियन्हि।' ..फ़ेर ओ सभ हमरा खोंचारैथि- 'अयं ये प्रेमा दाय, कॉलेज इंजीनियएरीक पढाइ पढ' जाय छलहुं कि प्रेमक इंजीनियरी पढ' लेल..? हं ये, राधा कृष्णक रास कत' नञि होइत छैक.. अयं ये प्रेमा दाइ, रास मे सभ किछु द' देलियन्हि कि किछु बचाइयो के राखलियन्हिए कि नञि.. नीके छै, विवाहक पहिनही विवाहक सभटा मज़ा लूटि लिय'। बाद मे फ़ेर ई कन्हैया नयिं त' कोनो आन कन्हैया, रास रचैया त' भेटबे करताह.. हुनका ट्रेनिंग अहीं द' देबैन्हि, कहबन्हि जे इंजीनियरीक ई खास कोर्स छलै... (कनैत) ई सभटा अपमान हम चुपचाप सहि गेलहुं।.. मात्र एक्कहि टा उमेद पर, जे एक बेर बस, एक

बेर अहां लग आबि जाइ, तहन त' फ़ेर सुखे सुख.. धन्य हमर बाउजी। वएह हमर सखा, वएह हमर सहायक.. सभटा विरोध सहितहुं हमर अन्तर्जातीय विवाह लेल पूर्ण सहमति देलन्हि.. अहाँक मायक सभटा सौख सरधा हमर बाउजी तिगुना चौगुना क' क' पूर्ण कएलन्हि। मुदा.. हुनका लेल हम एखनो धरि आनि जातिएक छौंड़ी छी..। घर परिवारक मर्जाद आ बाउजीक मुंह देखि चुप छी..। भरि दिन कोल्हूक बरद जकाँ खटैत छी.. मुदा चुप छी..। अहाँ स' दूटा गप्प कर' लेल तरसि जाइ छी.. मुदा चुप छी..। कतेक अरमान छल.. स'ख सिहंता छल.. अहाँ स' दुनिया जहान पर चर्च करब.. डिस्कशन्स करब, मुदा..(स्त्री के लागैत छै जे कोनो छोट बालिका ओकरा ल'ग आबि कनफुसकियाइत अछि -माँ! हम आबि रहल छी!

स्त्री : (स्त्री चेहाइत एम्हर-ओम्हर ताकैत अछि) के? के छी? कत' स' बाजि रहल छी?

बालिका : हम! अहींक बेटी! अहींक पेट स'..

स्त्री : (पेट पकड़ि के) नञि बाजू! चुप भ' जाऊ! आ सूति जाऊ! ई कोनो गप्प करबाक बेर छै? ई त' सुतबाक बेर छै। सूति रहू। देखिऐ, हमरो नींन आबि रहलए। हम्हूं सूति रहलहुं। ई देखियौ। (फोंफ कटबाक अभिनय। स्त्रीक बच्ची रूप मे हंसि आ कथन..)

बालिका : झूठ! बहन्ना! निन्नी नयिं। माँ! हम आएब, हमरा आब' दिय'।

स्त्री : (पति स') रोहित, सुनू ने! प्लीज! ई अप्पन संतान अछि.. हमर-अहाँक प्रेमक प्रथम निशानी! ..बाउजी कहै छथि.. बेटा-बेटी में कोन फरक?.. मुदा नञि! बाउजी, फरक छै..। फ़रक नयिं रहितियन्हि त' हम एना अपने बच्चा

लेल एतेक अंहुरिया कटितहुं? ओकरा अई धरती पर आन' में अपना के एतेक असहाय अनुभव करितहुँ..। हम सभ त' गुलाम छी । कहलो गेल छै- पराधीन सपनहुं सुख नाही। .. अम्मा जी.. मानि जाथु ने.. गोर पड़ै छी अम्मा जी, गोर पड़ै छी। अरे, आब अई मे हमर कोन दोख, यदि हमर कोखि मे बेटीए आएल त'? साइंस पढबइत काले टीचर हमरा सभ के बुझेलखिन्ह जे प्रजनन प्रक्रिया मे दू टा फ़ैक्टर होइत छै- एक्स आ वाई। स्त्री मे मात्र XXएटा होइत छै, आ पुरुख लग X आ Y दुनू। पुरुख X देलन्हि त' बेटी आ Y देलन्हि त' बेटा। अम्माजी, छोट मुंह, जेठ गप्प.. जदि हिनको पहिल बेर बेटीए भेल रहितियैक तहन..

सासु : (सासुक स्वर मे) तहन? तहन मारि देने रहितियैक। आ मारि देने रहितियैक नञि, मारि देलियई.. ओहो एकटा के नञि, तीन तीन टाके.. आ, ले, देख हमर हाथ.. देख, भगै कत' छें? ले देख, देख।

(दुनू हाथ भयानक तरीका स' सोझा देखबइत अछि। स्त्री चेहाक' आ डेरा क' दूर भगैत अछि.... स्त्री विक्षिप्त जकाँ करैत अछि..)

स्त्री : हा.. हा.. स्त्री.. अभागल..। शास्त्र मे कहल गेल छै, 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमन्ते तत्र देवा:!' फूसि, अनर्गल.. हम सभ त' मात्र दासी छी.. सेविका.. भूमिका मे बन्हल.. 'भोज्येषु माता, शयनेषु रम्भा:।' हम सभ मनुक्ख नञि, मात्र भूमिका छी.. भूमिका नीक.. हम नीक.. नीक-अधलाहक फ्रे़म हुनकर.... त' जहन भूमिके छी, त' जीब' दिय' हमरा आओर के अपन भूमिका संग.. माँ.. माता.. जननी.. मुदा नयिं, हम सभ त' कठपुतरी भरि छी। डोरी आनक हाथ में आ नचै छी हुनका ताले। .... (स्त्री उन्मत जकाँ चिकरइत अछि) ले, ले, भोगि ले.. भोग्या

छी हम.. आऊ, आऊ, आ मर्दन करू हमर इच्छा के, हमर मान के, हमर सम्मान के.. हे.. हे समस्त स्त्रीगण.. हे समस्त स्त्रीगण, आऊ, आऊ आ प्रस्तुत करू अपना के.., प्रस्तुत करू अपना के, प्रस्तुत करू अपना के, प्रस्तुत करू अपना के। (एक-एक वस्त्र उतारबाक अभिनय। अंतिम वस्त्र उतारैत मुंह नुका लइत अछि..) मात्र रम्भा, मात्र उर्वशी, मात्र मेनका.. अहिल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा, मंदोदरी - ई प्रात: स्मरणीया पंचकन्या नञि.. रंभा, उर्वशी, मेनका-भोग्या। ..सीता..त्याज्या। ..नञि, द्रौपदी नञि। पति आ समाज स' प्रश्न पूछ'बाली द्रौपदी नञि चाही हमरा समाज के.. मात्र सीता चाही हमरा.. सीताक भूमि पर सीते-सीता.. प्रश्न नञि.. मात्र सहू.. आ नञि सहि सकी त' सन्हिया जाऊ.. ।

बच्ची : मां, मां, आब' द दिय' हमरा। हम आएब। मां, मां, हमरा बचा लिय', बचा लिय' हमरा। (बालिकाक चिकरनाइ)

(स्त्री के होइत छै जे किओ ओकरा बचिया के ओकर कोखि से बाहर घींचि रहलए। स्त्री द्वारा बालिका के बचब' लेल ओकरा दिस दौगनाई कि बिच्चहि मे ठमकि जाइत अछि आ बेहोश भ' जेबाक अभिनय करैत अछि, जेना ईथर सुंघाएल गेल हुअए..। फ़ेर कने चैतन्य भ' क' एम्हर-ओम्हर करोट फ़ेरैत अछि।.. हठात ओ चिकरैत अछि, जेना किओ ओकरा घिसिया रहल हुअए.. ओ दौग-दौग क' चारू कात स' भागबाक प्रयास करैत अछि, मुदा सभ ओर स' ओकर रास्ता बन्न अछि.. चारू कात स' निराश ओ पाछा मंचक देवाल/पर्दा दिस भागैत अछि आ ओत' टकराक' खसैत अछि.. ओ एक पएर पकड़ि क' चिकरैत अछि, जेना किओ ओकर एक टाँग काटि देने हुअए.. 'माँ...' स्त्री एके पएर से अपना के घिसियबइत भागबाक प्रयास करैत अछि कि फेर दोसर पएर पर प्रहार.. ओकर पुन: चीख..। तेज संगीत.. स्त्री दुनू पएर स' अशक्त फेर दोसर दिस भगैत अछि.. आब एक हाथ कटबाक अभिनय.. ओकर कननाइ- 'ई की क' रहल छी? हमर बेटी के कत' ल' जा रहल

छी? .. अरे, हमर बेटी अहांके की बिगाड़ने अछि?' स्त्रीक पुन: बच' लेल एम्हर-ओम्हर दौगनाई - एक हाथ आ दुनू पएर स' अशक्त.. कि दोसर हाथ कटबाक अभिनय आ ओकर चिकरनाइ.. 'एना जुनि करियउ हमर बेटी संगे। एना त' ओकर अंग-भंग क' क' नयिं मारियऊ हमर बेटी के। छोडि दियऊ हमर बेटी के।' .. (स्त्रीक बेचैनी बढ़ैत अछि.. ओ एम्हर स' ओम्हर दौगि रहल अछि.. लोथ-हाथ-गोर कटबाक अभिनय संगे.. अचानक जेना माथ पर प्रहारक अभिनय.. अभिनय स' पहिने जेना हथौड़ा माथ पर बरजैत देखने हुअए.. तदनुसार मां.. शब्दक चीख, छटपट आ भागबाक अभिनय.. 'माँ, मां, मां मां,.. देखब ई दुनिया.. हमरा आब' दे'.. कि माथ पर प्रहार आ ओ एकदम स' शांत.. स्त्री चक्रति खा के' खसि पड़ैत अछि। कनेक काल बाद ओकर शरीर मे हरकति होइत छै.. अशक्त भावे उठैत अछि आ विद्यापतिक गीत गबैत अछि।)

'कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ
दुखहि जनम लेल दुखहि गमाओल
नयन न तिरपित भेल', हे भोलानाथ..

(स्त्री लस्त पस्त अवस्था मे उठैत अछि.. ओ एखनो विभ्रम केर अवस्था मे अछि। अही अवस्था मे ओ अपना के निरेखइत अछि, पेट सोहरबइत अछि। पहिने लागै छै जे पेट मे किछु नयिं छै, मुदा फ़ेर पेट के सोहरबइत अछि। अई बेर ओकरा प्रतीत होइत छै जे ओकर गर्भ नष्ट नयिं भेलैये। ओ रसे- रसे अपना के सम्हारैत अछि ..कपड़ा, केश, विन्यास आदि सभटा ठीक करैत अछि.. मोन मे बेचैनी छै, जकरा एकटा दीर्घ श्वासक संगे बाहर करबाक प्रयास करैत अछि.. गमे- गमे चलि क' फ़ेर ओ ओहि स्थान पर पहुंचइत अछि, जत' ओ छलीह। ओकरा चेहरा पर फ़ेर विभ्रमक स्थिति अछि। ओ अपन शरीरक एक एक अंग देखैत अछि, फ़ेर अपन पेट के। वास्तविकताक भान भेला पर ओ अपन पेट के प्यार स' सोहरबैत अछि। एक गोट निश्चयक भाव ओकर चेहरा पर अबैत छै, जे भेलै बहुत, आब नञि। स्त्री रसे- रसे

उठैत अछि, अपन संपूर्ण शरीर के निरखैत अछि, जेना ओकर संपूर्ण शरीरक एक एक टा अंग नव-नव हुअए। ....अपन स्वर के निश्चित बनबैत अछि। मुख पर दृढ़ निश्चयक भाव।)

स्त्री : नञि संभव अछि हमरा स' ई .. अपने हाथे अपन संतानक हत्या.. धरती पर जनमल संतानक हत्या करितहुँ त' जेल जइतहुं, राक्षसी कहबितहुं, मुदा ई अजनमल संतानक.. सेहो हिनका आओरक प्रसन्नता लेल?.. हिनक तथाकथित.. परम्पराक रक्ष लेल?.. हमरा स' विवाह कएला सन्ते जे मर्जाद टूटल छल, तकर अभिशाप दूर कर' लेल?'.. (दर्शक स') ई हमर इंजीनियर पति..कहबाक लेल आधुनिक, मुदा आधुनिकता स' कोसो दूर.. अरे, आधुनिक त' हमर पिता छथि- ग्रामीण, कमे पढल-लिखल, मुदा विचार स' कतेक आधुनिक.. परन्तु ई हमर अजुका जुगक पढुआ पति? प्रेमी रूप मे कतेक नीक, कतेक समर्पित- आ प्रेमी स' पति बनितहि सभटा सुड्डाह? हिनका लेल हम मात्र पत्नी, मात्र भोग्या..। .. अपने त' मातृभक्त कहाब मे ई बड़ड गौरव बुझै छथि, ..मुदा..हमरा मातृत्व सुख स' वंचित कर' लेल आएल छथि.. (जेना संपूर्ण सृष्टि के ललकारैत) त' सुनू, हे सृष्टि, हे बिधाता, हे अई धरतीक समस्त नर- नारी! सुनू, हम तैयार छी.. अपन बेटीक उत्तरदायित्व वहन कर लेल.. हे, सुनने छलहुँ.. ओकर धड़कन.. डाक्टर सुनौने छल..कतेक मीठ, कतेक सोहनगर.. धक-धक, धक-धक, छुक छुक, छुक- छुक..जेना रेलगाड़ी चलैत हुअए। एहेन मीठ आ सोहनगर धड़कन के हम अपने हाथे.. बन्न क' दी?..आ जौं दोसरो बेर बेटिए एलीह, तहन फेर डाक्टर.. फेर हत्या। फ़ेर इय्ह सभ नाटक?..न.., बहुत भेल।..प्रेमी स' पति रूप मे परिवर्तित तथाकथित मातृभक्त हमर परम प्रिय प्राणपति परमेश्वर.. हँ, हम..

अई धरतीक कोमल, अबला, कमजोर, असहाय स्त्री, आई समाजक देल ई परिभाषा स' अपना के मुक्त करै छी। मुक्त करै छी अपना के अई सभ बंधन स'.. आ धारण करै छी अपन स्त्रीत्च के.. स्त्रीत्वक मान के, ओकर मर्याद के आ शप्पथि लइत छी अई धरती माता के छूबि के जे आब नञि.. आब नञि त' हम मरब, नञि हमर बेटी.. (स्त्री उत्तेजना स थर थर कंपैत अछि। स्त्री के लागै छै जे ओकरा कान मे ओकर बेटी कुहुकि रहल अछि। ओकरा चेहरा पर प्रसन्नताक भाव अबै छै। ओ प्रथम दृश्य मे मंचक पाछां रखल गुड़िया के उठा क' ल' अबाय्त अछि। ओकरा कोरा मे नेने-नेने ओ मंचक बीच में बैसि जाइत अछि.. ओक्का-बोक्का खेल स्त्री आरंभ करैत अछि..)

'ओक्का बोक्का तीन तरोक्का
लउआ लाठी चंदन काठी
चंदना के नाम की?
रघुआ
खइल' कथी?
दूध भात
सुतल' कहाँ?
बोन मे
ओढ़ल' कथी?
पुरइन के पत्ता
ढोढ़िया पचक!

ढोढ़िया पचक पर स्त्री अपन तर्जनी प्यार स' गुडिया दिस आ फ़ेर अपने नाभि पर खोपैत अछि.. दुनू खिलखिलाइत अछि.. पार्श्व स' मृदुल, मद्धम सितारक अथवा जलतरंगक धुन.. स्त्रीक नाना बाल-कौतुक / मातृ सुलभ गतिविधिक संगे प्रकाश शनै: शनै: फेडआउट होबैत अछि.... ।

# # #